जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

हिण्डौनसिटी

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौनसिटी, शुक्रवार 20 जून, 2025

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून
सामंजस्य एवं शान्ति के लिए योग

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

11वां अंतर्राष्ट्रीय

योग दिवस

एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग

21 जून, 2025

राज्य स्तरीय समारोह

मुख्य अतिथि

श्री भजनलाल शर्मा

माननीय मुख्यमंत्री

प्रात: 6:00 बजे | खुहड़ी सैंड ड्युन्स, जैसलमेर

प्रत्येक जिला, ब्लॉक व ग्राम पंचायत मुख्यालयों,
धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों इत्यादि
पर आयोजित कार्यक्रमों में योग गुरुओं द्वारा
योगाभ्यास करवाया जाएगा

अपने निकटतम योग स्थल पर उपस्थित रहकर
करें योग- रहें निरोग

राजस्थान संवाद

आयुर्वेद, योग व प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी एवं होम्योपैथी (आयुष) विभाग, राजस्थान

विचार बिन्दु

तुम ये कभी मत सोचो कि आत्मा के लिए कुछ असंभव है। ऐसा सोचना तो सबसे बड़ा अधर्म है। अगर कोई पाप है, तो वो यही है; ये कहना कि तुम निर्बल हो या अन्य लोग निर्बल हैं। –स्वामी विवेकानंद

जलवायु परिवर्तन (ग्लोबल वार्मिंग) का मुकाबला हम शाकाहारी बनकर भी कर सकते हैं

गत सोमवार दिनांक 16.6.2025 से यू.एन. जून क्लाइमेट मीटिंग्स Subsidairy Bodies (SB 62) का अधिवेशन अन्तर्राष्ट्रीय सेन्टर Bonn (WCCB) बॉन (जर्मनी) में प्रारम्भ हुआ है। यह अधिवेशन दिनांक 16 से 26 जून, 2025 तक चलेगा। इसमें लगभग पांच हजार डेलीगेट्स भाग ले रहे हैं। इसका प्रारम्भ यू.एन. क्लाइमेट चेन्ज के सेक्रेटरी जनरल श्री साइमन स्टिल के सम्बोधन से हुआ।

कॉप-29 की मीटिंग बाकू अज़रबैजान में हुई थी और अब कॉप-30 का अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन नवम्बर 2025 में बेलम ब्राजील में होने जा रहा है।

जलवायु परिवर्तन (ग्लोबल वार्मिंग) की विभीषिका से लडने के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय संधि को जन्म दिया था, जिसे पेरिस एग्रीमेण्ट 2016 के नाम से पुकारा जाता है। इसके द्वारा कई सदस्य देशों ने अपने वायदों की घोषणा की थी कि वे जलवायु परिवर्तन के कारण प्रदूषण को कम करने के हेतु कदम उठायेंगे ताकि संसार का तापमान जो औद्योगिकीकरण के समय यानी 1990 के स्तर पर था, के स्तर में कोई कमी न हो। यदि वह 4.5 डिग्री से. तक बढ़ता है तो वह संसार के समाप्त होने की घटना बन सकता है। यदि कार्बन उत्सर्जन 2.0 डिग्री से. से अधिक भी हो गये तो वह संसार की 1/3 आबादी को निगल जावेगा।

सन 2015-2016 का काल ऐतिहासिक वर्ष माना जाता है। इसमें क्योटा प्रोटोकॉल का स्थान पेरिस एग्रीमेण्ट ने लिया था। 121 देशों ने अपनी घोषणा की थी। पेरिस एग्रीमेण्ट का जन्म भारत ने अथक परिश्रम के कारण ही संभव हो सका था। लेखक का सौभाग्य रहा कि वह भारत के सोशल ग्रुप (एनजीओ) सिकोयडिकोन, पैरवी के डेलीगेशन के रूप में वे पेरिस एग्रीमेण्ट को जन्म लेने की घटना का साक्षी रहा है। हस्ताक्षरकर्त्ता देशों ने जो वायदे किये थे वे स्वैच्छिक थे।

वस्तुत: जो एग्रीमेण्ट हुआ है वह 2020 से प्रभावी हुआ है। किन्तु कार्बन उत्सर्जन में कमी कैसे आयेगी इस पर विचार होता रहेगा। Natiionally Determined Contribution कैसे निर्धारित होगा। हस्ताक्षरकर्त्ता देश क्या सचमुच ऐसा कर सवेंगे जिससे बढ़ते हुये तापमान में कमी हो और क्या उनके ये कदम निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचने में सहयोग होंगे। ऐसे कई प्रश्न अन्य कई विवादित ेले पर जून अधिवेशन में वार्ता होगी, विचार होगा और जो निर्णय लेंगे उन्हें ब्राजील अधिवेशन में प्रस्तावों के रूप में पारित कर उनका Adaptation किया जावेगा ताकि वे पेरिस एग्रीमेण्ट का अभिन्न अंग बन सके।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण कई तूफान आये हैं, कहीं बाढ़ें आई हैं तो कहीं सूखा पड़ा है, ग्लेशियल पिघल रहे हैं, नदियां सिकुड रही हैं, नई नई बीमारियां फैल रही हैं, समुद्र की सतह बढ़ रही है। जैविक विविधता विनाश की ओर जा रही है। जंगल सिमट रहे हैं और रेगिस्तान बढ़ रहे हैं। धरती का तापमान निर्धारित स्तर से 1.5 डिग्री से. से आगे बढ़ता जा रहा है। 2.0 डिग्री से. तापमान बढ़ने से समुद्र में मिथेन का रिसाव प्रारम्भ होगा और धरती स्वयं गर्मी पाकर जलेगी।

आज की परिस्थितियों पर विचार करें तो पायेंगे जलवायु परिवर्तन में सुधार नहीं है अपितु स्थिति और भी अधिक भयंकर हो रही है। कोरोना के भूत ने एक नये रूप में जन्म लिया, बीजों की उपयोगिता खत्म हो रही है, नई-नई बीमारियां फैल रही हैं, प्रलय जैसी बाढ़ आ रही है। मानव ही नहीं अपितु प्राणियों का जीवन भी संकट में है। पहाड़ जो बर्फ से आच्छादित थे, वहां बर्फ देखने को नहीं है। गर्मी ने रौद्र रूप धारण कर लिया है। धरती पर सांस लेना भी दूभर हो रहा है। यूक्रेन रूस व इजरायल ईरान के युद्ध में CO2 (कार्बनडाईऑक्साइड) का विसर्जन हो रहा है, वह भयंकर संकट को जन्म देने वाला है। धरती सम्भवत: मानव के रहने योग्य नहीं रहेगी।

यदि समस्त विश्व 8 दिन के लिये भी मांस खाना बंद कर दे तो पर्यावरण सुधर जावेगा। 50 प्रतिशत वैश्विक तापमान के लिये पशु सम्पदा उत्तरदायी है इससे 32,564 मिलियन टन कार्बनडाईऑक्साइड पैदा होती है। पशु उद्योग इतनी ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन करते हैं जितनी तो संसार के समस्त वाहन, कार, मोटर साईकिलें, ट्रेन, हवाई जहाज आदि भी नहीं करते हैं। मेनका गांधी का समर्थन करते हुये कई विशेषज्ञों ने कहा कि मांस के भोजन के कारण जंगल बर्बाद हो रहे हैं, पानी दूषित हो रहा है और बीमारियां बढ़ रहीं हैं।

उपरोक्त परिस्थितियों में तापमान को 2.0 डिग्री से. से अधिक बढ़ने को रोकने का संकल्प पूरा होना सम्भव नहीं है और 1.5 डिग्री से. तक रोकने की सोचना सपना हो चुका है। हम इस प्राकर केवल पेरिस एग्रीमेण्ट तक ही ग्लोबल वार्मिंग को रोकने पर निर्भर नहीं रह सकते। हमें विकल्प की तलाश करनी होगी। 80 प्रतिशत कार्बन उत्सर्जन के लिये विकसित देश ही उत्तरदायी हैं। पेरिस एग्रीमेण्ट तक हमारा कार्बन उत्सर्जन 50 जीटी CO2 हो चुका था। उसी को कम करने की कई हस्ताक्षरकर्ता देशों ने घोषणायें की थीं; किन्तु हमारी प्रगति नगण्य है। हमने अभी वैकल्पिक बिजली के उत्पादन की क्षमता बढ़ाने पर भी अधिक जोर दिया है।

विश्व के दो व्यक्तियों ने बीड़ा उठाया है कि "शाकाहारी बनो और विश्व को बचाओ"। एक हैं जॉन रोबिन्स, जिन्होंने बहुचर्चित पुस्तक **The Food Revolution: How Your Diet Can Help Save Your Life and Our World " लिखी है और दूसरी है दी सुप्रीम मास्टर efÛebieneF& keâer Hegmlekeâ **From Crisis to Peace: The Organic Vegan Way Is The Answer** दोनों लेखकों ने अकाट्य प्रमाणों से स्पष्ट किया है कि शाकाहारी बनकर धरती को विनाश से बचाया जा सकता है। चिंगहाई का मत है खाने के लिये पशुओं को मारना, केवल बहुमूल्य पानी का अपव्यय ही नहीं है, इससे ऊर्जा व जमीन की बर्बादी भी हो रही है। यह प्रक्रिया 51 प्रतिशत ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन की जननी है। सुप्रीम मास्टर ने नारा दिया है, मांस जनित पदार्थ खाना बंद करो और शाकाहारी बनो और धरती को वैश्विक ताप से बचाओ। उन्होंने अपील की है कि पशुओं के मांस को अपनी जीवन चर्चा से मुक्त करो। उनका मानना है कि यदि समस्त विश्व 8 दिन के लिये भी मांस खाना बंद कर दे तो पर्यावरण सुधर जावेगा। 50 प्रतिशत वैश्विक तापमान के लिये पशु सम्पदा उत्तरदायी है इससे 32,564 मिलियन टन कार्बनडाईऑक्साइड पैदा होती है। पशु उद्योग इतनी ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन करते हैं जितनी तो संसार के समस्त वाहन, कार, मोटर साईकिलें, ट्रेन, हवाई जहाज आदि भी नहीं करते हैं। मेनका गांधी का समर्थन करते हुये कई विशेषज्ञों ने कहा कि मांस के भोजन के कारण जंगल बर्बाद हो रहे हैं, पानी दूषित हो रहा है और बीमारियां बढ़ रहीं हैं।

जॉन रोबिन्स ने अपनी उक्त पुस्तक में लिखा है कि एक पोण्ड गेहूँ के उत्पादन में जहाँ 25 गेलन पानी खर्च होता है वहाँ एक पोण्ड मांस के उत्पादन में 2500 गेलन पानी खर्च होता है। मांस पकाने में शाकाहारी की अपेक्षा 10 गुना ईंधन चाहिये। 2.5 एकड भूमि में खेती कर गोभी, आलू, चावल, मक्का पैदा कर क्रमश: 23, 22, 19 व 17 व्यक्तियों को फूड एनर्जी दे सकते हैं और बीफ से केवल एक व्यक्ति को एनर्जी मिलती है।

संविधान ने अनुच्छेद 51क में मूल कर्त्तव्य दिये हैं उसमें निर्देश है कि नागरिक वन, झील, नदी और वन्य जीवों की रक्षा करेंगे और उनका संवर्धन तथा प्राणी मात्र के प्रति करूणा भाव रखेंगे तथा हिंसा से दूर रहेंगे। अनुच्छेद 48 व 48क में स्पष्ट किया कि राज्य वन्य जीवों की रक्षा करेगा। गौ वध को निषेध किया है। देश में वाइल्ड लाईफ (प्रोटेक्शन) एक्ट 1972 के माध्यम से जंगली जानवर को अभयदान दिया। पशु क्रूरता निवारण अधिनियम व पशु कत्ल कारखानों रूल्स में पशु के प्रति क्रूरता न करने के निर्देश दिये गये हैं। संविधान में जो करूणा भाव मूल कर्त्तव्यों में निर्देशित किये हैं वह पशुवध के औचित्य को स्वीकार नहीं करता। प्राणी में मानव के अतिरिक्त पशु-पक्षी भी आते हैं।

संविधान के अतिरिक्त, यदि हम अन्य धर्मों की पवित्र पुस्तकों में भी पढ़े तो आपको जानकारी मिलेगी कि धार्मिक पुस्तक हादिस में मोहम्मद साहब ने कहा है सभी प्राणियों के प्रति दया भाव रखो। कुरान शरीफ में कहा है, जानवरों को अकारण मत मारो।

प्राणी मात्र के प्रति करूणा भाव सचमुच मानवीय चेतना की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। बान्धवा: प्राणिन: सर्वे का ब्रह्मनाद ही भारत की श्रेष्ठता का प्रधान रहस्य है। देश के कानूनों में पशुओं के प्रति क्रूरता का व्यवहार कानूनी अपराध है। पशुओं को भी जीने का अधिकार प्राप्त है।

यह सही है संसार की बडी आबादी मांस सेवन करती है, किन्तु मांस खाने वाले व्यक्ति कई बीमारियों से ग्रसित हो सकते हैं और शाकाहारी होना इसकी अपेक्षा उचित माना जा रहा है और समय की पुकार है। अत: यूरोप के कई देश धीरे-2 शाकाहारी हो रहे हैं। अमेरिका व अन्य देशों में भी कई मांसाहारी लोग स्वेच्छा से शाकाहारी हो रहे हैं। मांस खाना निजता का अधिकार हो सकता है; किन्तु मानव हित में स्वेच्छा से शाकाहारी बनना, वर्तमान समय की आवश्यकता है।

इस लेख का अभिप्राय केवल इतना ही है कि आज मानव व धरती माँ को कार्बन उत्सर्जन के खतरे से बचाने का यही एक मात्र सही मार्ग है कि संसार के लोग शाकाहारी हों।

पर्यावरण को लेकर जो भयावह परिस्थिति विश्व में है वह मानव सभ्यता के लिये एक चुनौती बन चुकी है, इसका समाधान तो ढूँढना ही होगा। धरती माँ को बचाना होगा।

शाकाहारी बनो - धरती माँ को बचाओ !

-अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

पक्षी प्रेमियों व प्रकृति प्रेमियों के लिए एक आदर्श पर्यटन स्थल है "बंध बारैठा"

संतोष कुमार मीणा

भजनलाल सरकार भरतपुर जिले को ईको टूरिज्म एवं जल संरक्षण के क्षेत्र में सुदृढ़ करने के लिए संकल्पबद्ध है। वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान इस उद्देश्य को प्राप्त करने में बड़ी भूमिका निभा रहा है। बंध बारैठा भरतपुर का सबसे बड़ा और प्रमुख बांध है, जो न केवल एक महत्वपूर्ण जलस्त्रोत के रूप में जाना जाता है, बल्कि एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में भी इसकी विशेष पहचान रखता है। यह बयाना तहसील में भरतपुर शहर से लगभग 50 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। वर्ष 1866 में भरतपुर के शासक जसवंत सिंह ने काकुंड नदी पर इस बांध का निर्माण शुरू किया, जो 1897 में राम सिंह के शासन में पूरा हुआ। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर यह स्थल पर्यटकों को भी आकर्षित करता है। हरे-भरे जंगलों, शांत जलराशि और विविध प्रजातियों के पक्षियों की उपस्थिति इसे जैव विविधता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बनाती है, खासकर पक्षी प्रेमियों और प्रकृति प्रेमियों के लिए यह स्थान एक आदर्श पर्यटन स्थल है। यह क्षेत्र भरतपुर के प्रसिद्ध केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के नजदीक होने के कारण भी पर्यटकों का ध्यान खींचता है।

यह बांध भरतपुर जिले के साथ-साथ आसपास के कई क्षेत्रों की जल आवश्यकताओं को पूरा करता है। पीने के पानी की आपूर्ति हो या खेतों की सिंचाई, बंध बारैठा इस क्षेत्र की जीवनरेखा के रूप में कार्य करता है, किसानों के लिए यह एक वरदान साबित हुआ है। इसकी मदद से सिंचाई की सुविधा बेहतर हुई है और कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है। इस बांध का निर्माण ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसका निर्माण तत्कालीन भरतपुर रियासत के शासकों द्वारा कराया गया था जिससे उस समय के प्रशासन की दूरदर्शिता और जल संरक्षण के प्रति जागरूकता का पता चलता है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में जल स्त्रोतों की सुदृढीकरण की दिशा में निरंतर सकारात्मक प्रयास किये जा रहे हैं। राज्य सरकार द्वारा बजट घोषणा 2025-26 में भरतपुर के सबसे बडे बांध बंध बारैठा की जल भराव क्षमता बढ़ाने के लिए 2 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया गया है। यह राशि ईस्टर्न राजस्थान कैनाल प्रोजेक्ट एसीपी के तहत स्वीकृत की गई। इस प्रक्रिया के तहत पार्वती-काली सिंध-चंबल लिंक परियोजना से अतिरिक्त पानी को ईआरसीपी तक लाया जाएगा जिससे शेष जल बंध बारैठा में संग्रहित किया जा सकेगा। इस परियोजना से न केवल जल संरक्षण को बढावा मिलेगा, साथ ही बंध बारैठा बांध की क्षमता बढ़ने से केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के वेटलैंड क्षेत्र में विस्तार होगा और हजारों देशी-विदेशी पक्षियों के साथ-साथ किसानों को सीधे लाभ मिल सकेगा। इससे जिले की पेयजल समस्या में भी राहत मिलेगी। इस बांध के लिए बजट घोषणा 2024-25 में डूंगरी बांध से बंध बारैठा होते हुए सुजान गंगा भरतपुर लिंक करने का प्रावधान किया गया। इस हेतु 2371 करोड़ रूपए की डीपीआर तैयार की गई है।

डीग-कुम्हेर-भरतपुर में सांवई-खेड़ा डिप्रेशन से गोवर्धन ड्रेन तक 6 करोड़ 25 लाख रूपए की लागत से पानी लिफ्ट करने का कार्य करवाया जायेगा।

बंध बारेठा बांध पर वाटर स्पोर्ट्स गतिविधियां शुरू करने तथा इको टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार प्रयासरत है। यहां प्राकृतिक रूप से सुरम्य वातावरण के साथ वर्षभर पानी की उपलब्धता आने वाले समय में पर्यटन गतिविधियों के लिए अनुकूल मानी जा रही है। रियासतकालीन यह बांध तीन तरफ से पहाड़ियों से घिरा हुआ है। जैव विविधता यहां वर्षभर देखी जा सकती है। यहां पर देशी-विदेशी पर्यटकों का आगमन बना रहता है। यहां पर राज्य सरकार द्वारा पर्यटकों को आधारभूत सुविधाओं का विकास करने के साथ इको टूरिज्म के लिए बजट-2024-25 में प्रावधान किया गया है जो बंध बारैठा के सुनहरे भविष्य की ओर इंगित करता है। इससे स्थानीय नागरिकों को भी प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलने के साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बंध बारैठा की पहचान बनेगी।

आज के समय में जब जल संकट एक गंभीर समस्या बन चुका है, ऐसे में बंध बारैठा जैसे जलस्त्रोतों का संरक्षण और सुनियोजित प्रबंधन अत्यंत आवश्यक हो गया है। यह केवल एक जलाशय नहीं है, बल्कि भरतपुर की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक धरोहर का प्रतीक भी है, इसकी देखरेख और संरक्षण की जिम्मेदारी हम सभी की है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इससे लाभान्वित हो सकें और इसकी सुंदरता व उपयोगिता बनी रहे। बांध में है 1860 एमसीएफटी पानी, सालभर भरा रहता है :-बारैठा बांध की भराव क्षमता 29 फीट और 1860 एमसीएफटी है। यहां पूरे साल पानी भरा रहता है। पर्यटक सीजन अक्टूबर से फरवरी तक भी इसमें करीब 1200 एमसीएफटी पानी की उपलब्धता रहती है। इसलिए यहां एडवेंचर वाटर स्पोर्ट्स में एक्टिविटी पर्यटन स्थल के रूप में की पूरी संभावना है। इसके साथ ही रियासतकालीन महल और मानसून सीजन में यहां के झरने भी सैलानियों को आकर्षित करते हैं।

संतोष कुमार मीणा
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी, सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय, भरतपुर।

बीकानेर संभाग में 20 से 23 जून तक बारिश का अलर्ट जारी

बीकानेर, (निसं)। प्रदेश में मानसून प्रवेश कर चुका है, ऐसे में बीकानेर सहित पश्चिमी राजस्थान के जिलों में भी इसका बेसब्री के साथ इंतजार हो रहा है। तेज तापमान में गिरावट के बाद बारिश की उम्मीद की जा रही है, क्योंकि बादलों की आवाजाही हर रोज की तरह बनी हुई है।

मौसम विभाग की मानें तो सप्ताहभर तक बारिश की संभावना है। इसमें बीकानेर व जोधपुर संभाग में बारिश हो सकती है। वहीं शुक्रवार से इसकी प्रबल संभावना है। 20 जून से 23 जून तक बीकानेर में लगातार बारिश की प्रबल संभावना जताई गई है। हालांकि 24 व 25 जून को भी

- **जून के अंतिम सप्ताह में मानसून बीकानेर तक पहुंच जाएगा**

उम्मीद की जा रही है।

ऐसे में 19 जून से 25 जून तक लगातार बारिश बीकानेर संभाग में हो सकती है। मौसम विभाग ने 19 से 25 जून तक बीकानेर संभाग में बारिश का पूर्वानुमान दिया है। इसमें श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ व चूरू में बारिश की उम्मीद जताई गई है। वहीं 22 जून को बीकानेर जिले में भी बारिश की उम्मीद है। इसके बाद कुछ दिन तक बारिश का सिलसिला बीकानेर में भी जारी रह सकता है। मौसम विभाग की मानें तो जून के अंतिम सप्ताह में मानसून बीकानेर तक पहुंच जाएगा, इससे पहले 22 जून को मानसून की बारिश हो सकती है। रुक-रुक कर और कुछ क्षेत्रों में बारिश का दौर आगे भी जारी रह सकता है।

यूपीआई का बढ़ता दायरा: क्या भारत वास्तव में एक कैशलेस इकोनॉमी बन पाएगा ?

राम शर्मा

भारत में डिजिटल भुगतान प्रणाली ने पिछले एक दशक में अभूतपूर्व क्रांति ला दी है। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) इस डिजिटल भुगतान क्रांति का प्रमुख स्तंभ बनकर उभरा है। छोटे स्ट्रीट वेंडर्स से लेकर बड़े कॉरपोरेट्स तक, यूपीआई ने लेनदेन को अत्यंत सरल, तीव्र और सुरक्षित बना दिया है। निस्संदेह, यूपीआई के माध्यम से होने वाले ट्रांजेक्शन्स की बढ़ती संख्या ने भारतीय अर्थव्यवस्था को गति प्रदान की है, लेकिन एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि क्या भारत वास्तव में निकट भविष्य में पूर्णत: कैशलेस इकोनॉमी बन पाएगा? इस दिशा में कई चुनौतियाँ हैं, जिनका सामना करना आवश्यक है।

यूपीआई : भारत की डिजिटल भुगतान क्रांति का आधार

यूपीआई की शुरुआत 2016 में भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) द्वारा की गई थी। इसका प्राथमिक उद्देश्य बिना बैंक डिटेल्स साझा किए, त्वरित और सुरक्षित डिजिटल लेनदेन को बढ़ावा देना था। आज यूपीआई न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना चुका है। 2023 तक यूपीआई के माध्यम से कुल लेनदेन की संख्या 10,000 करोड़ को पार कर गई, जो इसकी बढ़ती लोकप्रियता का स्पष्ट प्रमाण है। पेटीएम, फोनपे, गूगल पे और अमेज़न पे जैसे डिजिटल पेमेंट ऐप्स ने यूपीआई को आम जनता तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अलावा, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी यूपीआई को सिंगापुर, यूएई, फ्रांस और जापान जैसे देशों में स्वीकृति मिली है, जो भारत की डिजिटल पेमेंट इनोवेशन की सफलता को दर्शाता है।

यूपीआई ने पारंपरिक बैंकिंग प्रक्रियाओं को पूरी तरह से बदल दिया है। अब केवल एक मोबाइल नंबर या वर्चुअल पेमेंट एड्रेस के माध्यम से पलभर में पैसा ट्रांसफर किया जा सकता है। मोदी सरकार की डिजिटल इंडिया पहल और 2016 की नोटबंदी ने डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आज चायवाले, सब्जीवाले, रिक्शाचालक और स्ट्रीट वेंडर्स तक यूपीआई स्वीकार करते हैं, जिससे कैशलेस ट्रांजेक्शन्स में भारी वृद्धि हुई है। इसके अलावा, कैशबैक, डिस्काउंट्स और रिवॉर्ड पॉइंट्स जैसे ऑफर्स ने यूजर्स को डिजिटल पेमेंट की ओर आकर्षित किया है।

यूपीआई के बढ़ते प्रचलन के बावजूद, भारत के पूर्णत: कैशलेस इकोनॉमी बनने में कई बाधाएँ हैं:-

भारत की लगभग 60 प्रतिशत आबादी गाँवों में निवास करती है, जहाँ इंटरनेट कनेक्टिविटी और स्मार्टफोन की पहुँच सीमित है। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता की कमी के कारण बुजुर्ग और कम पढ़े-लिखे लोगों को डिजिटल भुगतान में कठिनाई होती है। डिजिटल भुगतान के साथ फिशिंग, स्कैम और यूपीआई फ्रॉड के मामले तेजी से बढ़े हैं।

साइबर सिक्योरिटी एनजीओ प्रहार के अनुसार, 2024 में भारत में साइबर अटैक की घटनाओं में 46 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सरकार द्वारा साइबर सुरक्षा को लेकर पर्याप्त उपाय नहीं किए गए हैं, जिसके कारण लोग डिजिटल लेनदेन करने से हिचकिचाते हैं। भारत की 80 प्रतिशत श्रमशक्ति अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत है, जहाँ नकदी लेनदेन प्रमुख है।

छोटे व्यापारी और दैनिक मजदूरी करने वाले लोग अभी भी नकदी को प्राथमिकता देते हैं। ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या बनी हुई है, जिसके कारण डिजिटल भुगतान का प्रसार धीमा है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि यूपीआई ने भारत को कैशलेस इकोनॉमी की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है, लेकिन अभी भी एक लंबा सफर तय करना बाकी है। शहरी क्षेत्रों में डिजिटल भुगतान का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन ग्रामीण भारत में नकदी का वर्चस्व बना हुआ है।

भारत को पूर्णत: कैशलेस इकोनॉमी बनाने के लिए सरकार को कतिपय कदम उठाने होंगे, जैसे- डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना, साइबर सुरक्षा को मजबूत करना, ग्रामीण इंटरनेट इंफ्रास्ट्रक्चर को सुधारना और छोटे व्यापारियों को डिजिटल भुगतान के लिए प्रोत्साहित करना। यदि इन चुनौतियों का समाधान हो जाता है, तो भविष्य में भारत निश्चित रूप से एक पूर्णत: कैशलेस अर्थव्यवस्था बन सकता है। फिलहाल, भारत की अर्थव्यवस्था 'लेस-कैश' से 'कैशलेस' की ओर बढ़ रही है, और यूपीआई इस परिवर्तन का प्रमुख वाहक है।

- राम शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार

राशिफल शुक्रवार 20 जून, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2082, रेवती नक्षत्र रात्रि 9:45 तक, शोभन योग रात्रि 11:47 तक, गर करण प्रात: 9:50 तक, चन्द्रमा रात्रि 9:45 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मीन, मंगल-सिंह, बुध-मिथुन, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 9:50 तक है। सर्वार्थ सिद्धि सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। कुमार योग रात्रि 9:45 से सूर्योदय तक है। भद्रा रात्रि 8:35 से आरम्भ होगी। पंचक रात्रि 9:45 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:20 तक, लाभ अमृत 7:20 से 10:45 तक, शुभ 12:28 से 2:11 तक, चर 5:36 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:19

मेष
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब होगा।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

कन्या
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। नवीन कारोबारी अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

फोनः- 230200, 230400 फैक्सः- 07469-230600 वर्षः 17 संख्याः 226 प्रभात हिण्डौन सिटी, शुक्रवार 20 जून, 2025 पो. रजि.SWM-RJ-6069/2017-18 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

राहुल गांधी अपने जन्म दिन की पूर्व संध्या को विदेश से लौटे

उनके जन्म दिन पर आयोजित सभी कार्यक्रमों में सचिन पायलट उपस्थित रहे, पर सभी आयोजनों में गहलोत की गैर-मौजूदगी खली

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 जून। राहुल गांधी बुधवार देर रात विदेश यात्रा से दिल्ली लौटे ताकि गुरुवार को अपना जन्म दिन मना सकें।

- सचिन पायलट ने एआईसीसी कार्यालय में कार्यकर्ताओं से मिलने आए राहुल गांधी का स्वागत करते हुए बड़ा गुलदस्ता भेंट किया और जन्म दिन की बधाई दी।
- इसके बाद यूथ कांग्रेस द्वारा आयोजित रोज़गार मेले व फिल्म फुले की स्क्रीनिंग पर, सचिन पायलट ने अपनी पूर्ण उपस्थिति दर्ज कराई। पर, संयोगवश या पूर्व निश्चित इरादे के अनुसार और कोई वरिष्ठ नेता नहीं दिखा।
- एक उल्लेखनीय बात यह भी थी कि इस बार प्रियंका गांधी ने राहुल गांधी के जन्म दिन पर ट्वीट करके बधाई नहीं दी। कहा जा रहा है कि वे अपने भाई से नाराज़ हैं तथा राहुल से ज्यादा उनके चारों तरफ मंडरा रहे लोगों, संभवतया के.सी. वेणुगोपाल से नाराज़ हैं।

दिलचस्प बात यह रही कि कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य और वरिष्ठ कांग्रेस नेता सचिन पायलट ने एआईसीसी और युवा कांग्रेस द्वारा राहुल गांधी के जन्मदिन पर आयोजित सभी कार्यक्रमों में शिरकत की, जबकि राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की अनुपस्थिति संदिग्ध रही।

जब राहुल गांधी पार्टी कार्यकर्ताओं से मिलने एआईसीसी पहुंचे, तो सचिन पायलट वहाँ मौजूद थे, उन्होंने एक बड़ा गुलदस्ता लेकर राहुल को शुभकामनाएँ दीं। वे भारतीय युवा कांग्रेस द्वारा आयोजित

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सचिन पायलट ने राहुल गांधी को एआईसीसी कार्यालय में जन्मदिन की बधाई दी और गुलदस्ता भेंट किया।

मुख्यमंत्री शर्मा आज जैसलमेर में, गड़सीसर तालाब की पूजा करेंगे

जैसलमेर, 19 जून (नि.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा शुक्रवार को अहमदाबाद जाएंगे और गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी को श्रद्धांजलि देकर शाम 6:30 बजे जैसलमेर पहुँचेंगे। वे एयर पोर्ट से सीधे गड़सीसर तालाब पहुँचकर वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत जिले के प्राचीन पवित्र गड़सीसर सरोवर

- मुख्यमंत्री शनिवार को सुबह जैसलमेर के खुड़डी सैंड ड्यून्स पर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में भी शिरकत करेंगे।

की पूजा एवं आरती करेंगे। मुख्यमंत्री सर्किट हाउस में रात्रि विश्राम करेंगे। अगले दिन शनिवार को मुख्यमंत्री सुबह पौने छः बजे खुहड़ी सैंड ड्यून्स के लिए रवाना होंगे और वहाँ होने वाले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित राज्य स्तरीय योग कार्यक्रम में शामिल होंगे। यहाँ से मुख्यमंत्री पुनः जैसलमेर पहुँचेंगे और फिर जैसलमेर एयर पोर्ट से जयपुर प्रस्थान करेंगे।

ट्रंप बार-बार भारत-पाक युद्ध बंद करवाने का दावा अभी भी क्यों कर रहे हैं?

मसला है दक्षिण पूर्व एशिया में अपने घटते प्रभाव को किसी तरह जीवित रखना

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 जून। स्व-प्रचार और टकराव की अपनी विशिष्ट शैली में, अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने एक बार फिर यह दावा किया है कि उन्होंने व्यक्तिगत रूप से भारत और पाकिस्तान के बीच का युद्ध "रोक दिया" था, जबकि नई दिल्ली ने ऐसे किसी भी दावे को स्पष्ट रूप से खारिज कर दिया है। यह दावा, जिसे ट्रंप कई बार दोहरा चुके हैं, भारत की आधिकारिक स्थिति के विपरीत है और इससे नैरेटिव (कथानक) के नियंत्रण, कूटनीतिक सीमाओं और दक्षिण एशियाई भू-राजनीति में वॉशिंगटन के प्रभाव की चाह को लेकर एक गहरा टकराव उजागर होता है।

ट्रंप क्यों इस बात पर अड़े हैं कि उन्होंने युद्ध रोका? ट्रंप के लिए भारत-पाकिस्तान का तनाव, कई अन्य भू-राजनीतिक संकटों की तरह एक ऐसा मंच है, जहाँ वे व्यक्तिगत कूटनीति का प्रदर्शन कर सकते हैं। "दो परमाणु देशों के बीच युद्ध रोकने की उनकी कहानी उनके छवि निर्माण अभियान का हिस्सा है, जिसमें वे स्वयं को "डीलमेकर" तथा संकट समाधानकर्ता के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

- भारत को ट्रंप का दंभपूर्ण दावा विशेष रूप से इसलिए विचलित करता है, क्योंकि इस दावे से यह ध्वनि आती है कि मोदी सरकार का भारत की सार्वभौमिकता व "इन्डिपेन्डैंट विदेश नीति" का "क्लेम" एक मिथ्या घटनाक्रम है।
- इसके अलावा ट्रंप के दावे से, भारत का यह पुराना सिद्धांत, कि भारत, पाकिस्तान के साथ मतभेदों पर किसी प्रकार की मध्यस्थता स्वीकार नहीं करेगा, भी थोथा व मिथ्या साबित होता है और यह सिद्धांत 1972 के शिमला समझौते में भी पुरजोर ढंग से पुनः स्वीकार किया था, दोनों देशों ने।
- इसके अलावा ट्रंप के दावे से, प्र.मंत्री मोदी की, भारत में सुरक्षा के मामले में दबाव में न आने की छवि को भी भारी धक्का लगता है।
- अमेरिका इस बात से चिंतित है कि "ग्लोबल साउथ" में उसका प्रभाव घट रहा है और अमेरिका इस क्षेत्र में अपनी सार्थकता किसी भी प्रकार बरकरार रखना चाहता है।

भारत के दृष्टिकोण से, ट्रंप का यह दावा कई स्तरों पर समस्या का कारण है। पहला, यह भारत की उस छवि को कमजोर करता है, जिसे उसने एक संप्रभु राष्ट्र के रूप में सावधानीपूर्वक गढ़ा है कि वह क्षेत्रीय संकटों को अपनी शर्तों पर हैंडल करने में सक्षम है। मोदी सरकार ने रणनीतिक स्वायत्तता,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पतंजलि®

11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर स्वस्थ, समृद्ध और परम वैभवशाली भारत के निर्माण का संकल्प लें

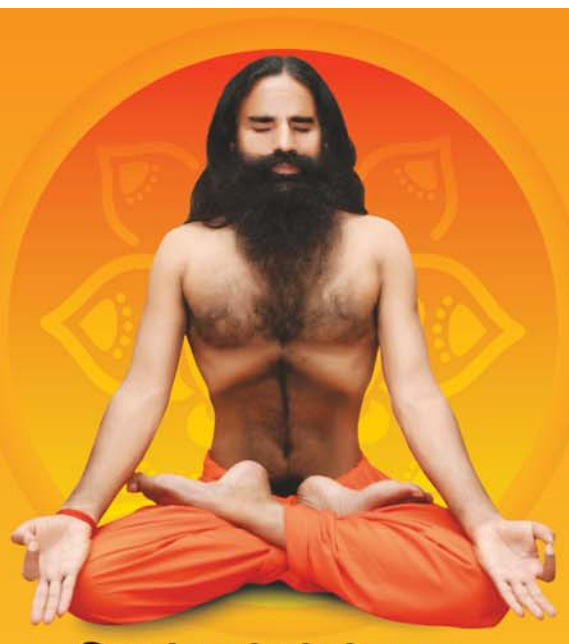

विश्व के सबसे बड़े योग गुरु
योगऋषि स्वामी रामदेव महाराज से सीधा जुड़कर योग सीखें
आस्था LIVE प्रतिदिन प्रातः 5:30 से 7:30 व रात 8:00 बजे | INDIA TV रोज सुबह 7:56 बजे

योगमय भारत : स्वामी रामदेव जी का आह्वान

आइए, इस अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर स्वामी जी के नेतृत्व में योगव्रती और स्वदेशीव्रती बनकर एक स्वस्थ, समृद्ध, समर्थ, संगठित और परम वैभवशाली भारत का निर्माण करें।

पतंजलि के माध्यम से पिछले तीन दशकों में योग, आयुर्वेद और स्वदेशी ने विश्व के 200 देशों में 200 करोड़ से अधिक लोगों को रोगमुक्ति, नशामुक्ति और आध्यात्मिक जागृति का मार्ग दिखाया है। इससे न केवल लाखों करोड़ रुपये की बचत हुई, अपितु एक आध्यात्मिक, सनातन जीवन पद्धति की नींव भी रखी गई।

"जागरण के देवता"

देश के शीर्षस्थ संत सहित करोड़ों लोग स्वामी जी महाराज को "जागरण के देवता" के रूप में देखते हैं जिन्होंने देश भर में 25 लाख किलोमीटर की यात्रा करके दस करोड़ से अधिक लोगों को योग का प्रशिक्षण देकर, एक करोड़ निःस्वार्थ एवं निष्काम सेवा करने वाले निष्ठावान कार्यकर्ता तैयार किए। पतंजलि के वे प्रशिक्षित योगी भाई-बहन देश के हर गांव, शहर, गली और मोहल्ले में एक लाख से अधिक योग शिविरों एवं नियमित योग कक्षाओं के माध्यम से लोगों को स्वास्थ्य और जागरूकता का संदेश दे रहे हैं। सुबह जल्दी उठकर योग करने की यह क्रांति भारत को नई दिशा दे रही है।

निःस्वार्थ भाव से मानव कल्याण का अभियान आज पूरे देश भर में पतंजलि के 10,000 से अधिक केंद्रों और 2,500 योग्य एवं प्रशिक्षित वैद्यों के माध्यम से योग, आयुर्वेद एवं स्वदेशी के क्षेत्र में बहुत बड़ी सेवा चल रही है। यदि इस सेवा का मूल्यांकन करें तो राष्ट्रसेवा में यह एक लाख करोड़ रुपये से भी अधिक का योगदान है। पतंजलि का प्रत्येक प्रकल्प भारत माता की सेवा के लिए समर्पित है।

स्वदेशी से समृद्धिः अर्थ से परमार्थ ऑक्सफैम ग्लोबल यू.के. एवं अन्य स्रोतों के सर्वे के अनुसार, 1765 से 1900 के बीच विदेशी कंपनियों और आक्रांताओं ने भारत से 100 ट्रिलियन डॉलर से अधिक की लूट की और आज भी यह लूट निरंतर जारी है। स्वामी जी स्वदेशी के माध्यम से इस लूट को रोकने और भारत को आर्थिक महाशक्ति की ओर ले जाने के लिए संकल्पित हैं। **"Prosperity for Charity"**: पतंजलि ने 100% लाभ भारत माता की सेवा में लगाया है, लगा रहे हैं और आगे भी लगाएंगे।

भारतीय शिक्षा बोर्ड द्वारा मैकाले की शिक्षा पद्धति से मुक्ति 1835 से चली आ रही मैकाले की शिक्षा पद्धति से देश को मुक्त करने के लिए पतंजलि गुरुकुलम् और आचार्यकुलम् जैसे संस्थान भारतीय शिक्षा बोर्ड के साथ श्रेष्ठ व्यक्तित्व, चरित्र और नेतृत्व वाले बच्चों का निर्माण कर रहे हैं। आगे लाखों विद्यालयों को भारतीय शिक्षा बोर्ड से संबद्ध कर हम एक नए भारत का निर्माण कर रहे हैं। अपने बच्चों को पतंजलि गुरुकुलम्, आचार्यकुलम्, पतंजलि विश्व विद्यालय में पढ़ाएं और **BSB** के साथ अपने विद्यालय को संबद्ध करके राष्ट्र निर्माण के महायज्ञ में अपनी भूमिका निभायें।

स्वास्थ्य क्रांतिः निरोगी भारत चरक, सुश्रुत, धन्वंतरी और पतंजलि जैसे महर्षियों के ज्ञान पर आधारित वैज्ञानिक अनुसंधान के साथ पतंजलि वेलनेस, योगग्राम और निरामयम् जैसे विश्वस्तरीय इंटिग्रेटेड ट्रीटमेंट सेंटर स्थापित किए गए हैं, जहां करोड़ों लोग निरोगी और स्वस्थ हो रहे हैं। स्वामी जी का आह्वान है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं योग करे और दस लोगों को योग कराएं। यदि 1% जागरूक लोग भी सुबह योग करें एवं योगमय सनातन जीवन पद्धति को अपनाएं, तो भारत का हेल्थ बजट शून्य हो सकता है।

शोध और समाधानः विज्ञान और परंपरा का संगम पतंजलि के 500 से अधिक वैज्ञानिकों ने वर्षों के रिसर्च से एविडेंस-बेस्ड पतंजलि मेडिसिन्स विकसित की हैं, जो लिवर, किडनी, हार्ट, ब्रेन और रेस्पिरेटरी सिस्टम के रोगों को ठीक कर रही हैं। 5,000 से अधिक रिसर्च प्रोटोकॉल और 500 से अधिक इंटरनेशनल जर्नल्स में रिसर्च पेपर्स के पब्लीकेशन ने आयुर्वेद को रिसर्च एवं एविडेंस बेस्ड मेडिसिन का दर्जा दिलाने का बहुत बड़ा कार्य किया है।

योग धर्म अब युगधर्म बनेः सनातन ही समाधान है आज योग और सनातन धर्म विश्व की आवश्यकता हैं। तनाव, बीमारियां, सामाजिक और सांस्कृतिक पतन से जूझ रही दुनिया को पतंजलि योग और सनातन मूल्यों के माध्यम से नई दिशा दे रहा है। आइए, योगधर्म मूलक सनातन जीवन पद्धति को अपनाएं।

पंच महाक्रान्तियों का शंखनाद शिक्षा, चिकित्सा, आर्थिक एवं सांस्कृतिक गुलामी से मुक्ति दिलाने एवं आर्थिक व आध्यात्मिक भारत बनाने के लिए पतंजलि एक लाख से अधिक गौ माता की सेवा कर रहा है और गौवंश को बचाने के लिए एक बड़ी कार्य योजना पर कार्यरत है।

पतंजलि के शुद्ध एवं सात्विक प्रोडक्ट्स अपनाइए,
अपने बच्चों व परिवार को मिलावट के ज़हर से बचाइए।

रेजिडेंट डॉ. राकेश विश्नोई सुसाइड मामला: जोधपुर में रेजिडेंट्स का कार्य बहिष्कार जारी

जयपुर के एसएमएस अस्पताल की मोर्चरी के बाहर गुरुवार को छठे दिन भी धरना जारी रहा

- रेजिडेंट्स डॉक्टर की हड़ताल के चलते मरीजों को परेशानी का सामना करना पड़ा
- मामले को लेकर पूर्व विधायक मलखानसिंह विश्नोई सहित विश्नोई समाज के लोग कलेक्ट्रेट पहुंचे और कलेक्टर को ज्ञापन दिया

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर की एसएन मेडिकल कॉलेज के रेजिडेंट डॉक्टर राकेश विश्नोई के सुसाइड मामले को लेकर रेजिडेंट डॉक्टर्स ने दूसरे दिन भी कार्य बहिष्कार किया। एसएन मेडिकल कॉलेज के सभी रेजिडेंट डॉक्टर ने दो घंटे की सुबह आठ से दस बजे तक पेनडाउन हड़ताल रखी।

रेजिडेंट डॉक्टर एसोसिएशन का कहना है कि डॉ. राकेश के सुसाइड मामले को लेकर अब तक प्रशासन की ओर से कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है। प्रशासन की चुप्पी के विरोध में प्रतीकात्मक हड़ताल रखी गई। एसोसिएशन के महासचिव रणजीत चौधरी ने बताया कि संबंधित व्यक्ति को तत्काल पद से हटाने, पीड़ित परिवार की बात सुनकर स्वतंत्र और निष्पक्ष जांच करने और इसके साथ ही सभी रेजिडेंट्स को मानसिक सुरक्षा और कार्य का वातावरण मिलने की मांग रखी है। मांगों पर कार्रवाई नहीं होने तक कार्य का बहिष्कार जारी रहेगा। एसोसिएशन की बैठक करके आगे की रणनीति तय पर चर्चा की गई। वहीं, रेजिडेंट्स की हड़ताल के चलते मरीजों को परेशानी का भी सामना करना पड़ा।

जानकारी के अनुसार डॉक्टर राकेश ने शुक्रवार (13 जून) को जहर खा लिया था। गंभीर हालत में उन्हें जयपुर रेफर किया था, जहां 14 जून रात में उनकी मौत हो गई। डॉक्टर ने मौत से पहले एक वीडियो में कहा था फार्माकोलॉजी विभाग के एचओडी थीसिस को लेकर परेशान कर रहे हैं। जिसके चलते मैंने ये कदम उठाया।

एसएन मेडिकल कॉलेज के फार्माकोलॉजी विभाग के एचओडी राजकुमार राठौड़ ने कहा कि रेजिडेंट डॉक्टर पहले से मानसिक रूप से परेशान थे और उनका इलाज चल रहा था। रेजिडेंट्स डॉ. राकेश विश्नोई के परिजन फार्माकोलॉजी विभाग के एचओडी डॉ. राजकुमार राठौड़ पर कार्रवाई सहित मांगों को लेकर जयपुर के एसएमएस अस्पताल के बाहर धरना दे रहे हैं। दूसरी तरफ इस मामले को लेकर पूर्व विधायक मलखानसिंह विश्नोई सहित विश्नोई समाज के लोग कलेक्ट्रेट पहुंचे। डॉक्टर राकेश बिश्नोई के आत्महत्या किए जाने के मामले में मांगों को लेकर गुरुवार को बिश्नोई समाज ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया। ज्ञापन में बताया कि राकेश विश्नोई एसएन मेडिकल कॉलेज जोधपुर में फार्माकोलॉजी विभाग में पीजी तृतीय वर्ष के रेजिडेंट थे। उनको उन्हीं के विभाग के प्रमुख राजकुमार राठौड़ बार-बार मानसिक रूप से प्रताड़ित कर रहे थे व उनकी बार-बार हद से ज्यादा मानसिक प्रताड़ना को सहन नहीं कर पा रहे थे। इसके चलते डॉ. राकेश विश्नोई ने परेशान होकर सेल्फोस की गोलियां खा ली। जिसकी वजह से उनकी मौत हो गई।

मामले को लेकर विश्नोई समाज के नेता रामनिवास बुद्धनगर ने बताया इस मामले को लेकर बिश्नोई समाज के लोगों ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया है। जिसमें मांग की है कि राजकुमार राठौड़ को हत्या की संगीन धाराओं में त्वरित गिरफ्तार किया जाये। उच्च स्तर पर मामले की जांच की जाये। स्व. डॉ. राकेश विश्नोई की पत्नी को योग्यता के आधार पर सरकारी नौकरी दी जाए।

रामनिवास बुद्धनगर ने बताया कि स्व. डॉ. राकेश विश्नोई के परिवार को दो करोड़ का आर्थिक मुआवजा दिया जाये। आगे से इस प्रकार की निन्दनीय घटना ना हो, उसके लिये सरकार ठोस कदम उठाये। यदि समय रहते सरकार ने उनकी मांगें नहीं मानी तो मुख्यमंत्री के फलोदी दौरे का विरोध किया जाएगा। वहीं समाज की ओर से उठा आंदोलन भी किया जाएगा।

उधर रेजिडेंट डॉ. राकेश बिश्नोई की आत्महत्या के मामले में जयपुर के एसएमएस अस्पताल की मोर्चरी के बाहर गुरुवार को छठे दिन भी धरना जारी रहा। परिजन से वार्ता करने के लिए चार चिकित्सकों का एक प्रतिनिधिमंडल जयपुर पहुंचा, लेकिन विभिन्न मांगों को लेकर फिलहाल गतिरोध टूट नहीं पाया।

मेडिकल कॉलेज हॉस्टल के वाटर कूलर में करंट से चिकित्सक की मौत

घटना के बाद रेजीडेंट ने कार्य का बहिष्कार किया, कार्रवाई की मांग की

- साथी चिकित्सकों ने सीपीआर देते हुए उन्हें बचाने की कोशिश की, लेकिन उनकी मौत हो गई

उदयपुर, (निसं)। संभाग के सबसे बड़े राजकीय चिकित्सालय महाराणा भूपाल चिकित्सालय के आरएनटी मेडिकल कॉलेज हॉस्टल में बुधवार देर रात वाटर कूलर से पानी भरते करंट आने से एक चिकित्सक की मौत हो गई। मौत के बाद रेजीडेंट चिकित्सकों ने हंगामा करते हुए कार्य का बहिष्कार कर दिया।

आरएनटी मेडिकल कॉलेज के रेजीडेंट चिकित्सक एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. दीपेन्द्र ने बताया कि रवि का चचेरा भाई प्रशांत रेजीडेंट डॉक्टर है। प्रशांत रात को नाइट ड्यूटी पर था। रात करीब दो बजे रवि हॉस्टल की चौथी मंजिल पर स्थित वाटर कूलर से पानी भर रहे थे। इसी दौरान उन्हें करंट का झटका लगा और जोर से चिल्लाते हुए अचेत होकर गिर पड़े। इसके बाद साथी चिकित्सकों ने सीपीआर देते हुए उन्हें बचाने की कोशिश की लेकिन उनकी मौत हो गई।

सुबह घटना के विरोध में रेजीडेंट चिकित्सकों ने कार्य का बहिष्कार करते हुए विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया और कार्रवाई की मांग की। रेजीडेंट ने बताया कि वाटर कूलर में करंट की शिकायत करने के बावजूद उसका समाधान नहीं किया गया और यह हादसा हो गया। मृतक चिकित्सक डॉ. रवि शर्मा (35) जो खेरवाड़ा के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में नियुक्त थे, वे अपने चचेरे भाई के पास एक-दो दिन हॉस्टल में रूके हुए थे। डॉ. रवि शर्मा ने जोधपुर मेडिकल कॉलेज से 2010 में एमबीबीएस की थी और अजमेर जेएलएन मेडिकल कॉलेज से पीजी की थी। इसके बाद खेरवाड़ा में बतौर मेडिकल ऑफिसर पोस्टेड थे और आरएनटी मेडिकल कॉलेज की सीनियर रेजीडेंट की लिस्ट में उनका नाम आया था इसके बाद वे जल्द ही यहां जॉइन करने वाले थे।

वहीं आरएनटी प्रिंसिपल विपिन माथुर ने समझाइश करते हुए पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार करने की बात कही लेकिन रेजीडेंट नहीं माने और विरोध प्रदर्शन जारी रखा। इधर, संबंधित के खिलाफ कार्यवाही करने तक रेजीडेंट चिकित्सकों ने हडताल जारी रखने की बात कही है।

ग्राम देवमाली में पैंथर व दो शावक दिखे, ग्रामीणों व श्रद्धालुओं में दहशत

मसूदा, (निसं)। मसूदा उपखंड की ग्राम पंचायत देवमाली क्षेत्र व भगवान देवनारायण मंदिर परिसर व आसपास पैंथर और दो शावकों की तीन-चार दिनों से चहलकदमी से वन विभाग सतर्क हो गया है।

मंदिर में लगे सीसीटीवी में मूवमेंट

- वन विभाग अलर्ट मोड पर, पिंजरा लगाया

भगवान देवनारायण मंदिर परिसर में सीसीटीवी कैमरे में पैंथर विचरण करता दिखाई दिया।

के ग्रामीणों का दावा है कि दो शावक भी साथ हैं। ग्रामीणों व श्रद्धालुओं में दहशत का माहौल देखने को मिल रहा है। दो दिन पूर्व भगवान देवनारायण मंदिर परिसर में भी उनकी चहल कदमी दिखाई दी। सीसीटीवी कैमरे में पैंथर विचरण करता दिखा।

वह पहले मंदिर तक बनी सीढ़ीयों पर चढ़ा, रेलिंग में से दूसरी ओर गया किसी वस्तु से अचानक चमक कर तेजी से सीढ़ी से नीचे की ओर भाग गया। सीसीटीवी कैमरे में पैंथर वहां से परिक्रमा स्थल होते हुए मंदिर में घूमता नजर आया। वहीं पैंथर अपने दो शावकों के साथ नजदीकी पहाड़ियों पर घूमता दिखा हालांकि ग्रामीणों का दावा है कि पैंथर के साथ उनके शावक भी घूम रहे हैं लेकिन सीसीटीवी कैमरे में केवल पैंथर ही घूमता नजर आया। जबकि मंदिर में सुबह की आरती में आने वाले श्रद्धालुओं में डर बना हुआ है। पैंथर और उसके शावक को मंदिर की पहाड़ी पर घूमता देखा गया। ग्रामीण में मवेशियों की सुरक्षा को लेकर काफी दहशत दिखाई दे रही है। लोगों ने बताया कि पैंथर की मौजूदगी से अब इंसानों की सुरक्षा को लेकर भी डर सताने लगा है। ग्रामीणों ने वन विभाग की को सूचना दी। सूचना पर वन विभाग अलर्ट हो गया। वनरक्षक हजारीलाल ने बताया कि पैंथर की गतिविधियों को देखते हुए वन विभाग की टीम रात में गश्त कर रही है वहीं पैंथर को पकड़ने के लिए पिंजरा भी लगा दिया गया है। देवमाली में पिछले कुछ दिनों से पैंथर और उसके दो शावकों की मौजूदगी बनी हुई है। वन विभाग की टीम लगातार निगरानी कर रही है।

तस्कर विष्णु सेन का अवैध मकान व संपत्ति कुर्क

उदयपुर, (निसं)। शहर के अम्बामाता थाना पुलिस ने मादक पदार्थ तस्करी से अवैध आय से तस्कर विष्णु सेन द्वारा निर्मित मकान व संपत्ति को पुलिस ने कुर्क किया है। एसपी योगेश गोयल ने बताया कि अम्बामाता थाने के हिस्ट्रीशीटर विष्णु सेन उर्फ मुकेश सेन पुत्र सुरेश चन्द्र सेन निवासी हवेली नाका सराफा थाना अटलबंद भरतपुर हाल आमेट भवन ब्रह्मपोल दरवाजा अम्बामाता एवं कालारोही नाई के खिलाफ विभिन्न थानों में अवैध मादक पदार्थ तस्करी, अवैध हथियार सप्लाई एवं गभीर धाराओं के 30 अपराधिक प्रकरण दर्ज है। हिस्ट्रीशिटर विष्णु सेन की अर्जित आय व प्रोपर्टी के अवलोकन के आधार पर तत्कालीन अम्बामाता थानाधिकारी डॉ. हनुवंतसिंह राजपुरोहित द्वारा आरोपी की संपत्तियों की जांच शुरू की गई। इस दौरान आरोपी की संपत्ति मादक पदार्थों की अवैध तस्करी से अर्जित आय से बनाई गई है। आरोपी विष्णु सेन उर्फ मुकेश सेन व उसके परिजनों द्वारा आय के ज्ञात स्त्रोत की तुलना में कई गुना अधिक संपत्ति अर्जित की गई है, जो मादक पदार्थ तस्करी से प्राप्त आय से अर्जित करने की गई थी। इस पर एनडीपीएस एक्ट की धारा 68 एफ में इस्तगासा तैयार कर पेश किया गया। इस पर दिल्ली स्थित प्राधिकृत अधिकारी के समक्ष इस्तगासा प्रस्तुत किया गया। मामले में जानकारी मांगने पर अम्बामाता पुलिस थाने द्वारा उपलब्ध कराई गई। मामले में प्राधिकृत अधिकारी ने विष्णु सेन को अपना पक्ष रखने का समय दिया लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। जबकि मामले में अम्बामाता थाना धिकारी मुकेश सोनी व एसपी कार्यालय में कार्यरत निरीक्षण संजीव स्वामी द्वारा तथ्यपरक पैरवी की गई। जिसे स्वीकार कर न्यायालय ने उचित मानते हुए दो मंजिला मकान, कार व बाइका कुर्क करने के आदेश जारी किए।

गंगनहर में 2500 क्यूसेक सिंचाई पानी की मांग, धरना जारी

श्रीगंगानगर, (निसं)। गंगनहर में पूरे 2500 क्यूसेक सिंचाई पानी की मांग को लेकर महाराजा गंगासिंह चौक पर किसानों का अनिश्चितकालीन धरना गुरूवार को चौथे दिन भी जारी है। धरने का नेतृत्व श्रीकरणपुर विधायक रूपिंदर सिंह कुन्नर कर रहे हैं। गुरूवार को विधायक कुन्नर सहित 23 किसान सुबह से शाम छह बजे तक क्रमिक अनशन पर बैठे।

- श्रीकरणपुर विधायक रूपिंदर सिंह कुन्नर सहित 23 किसान क्रमिक अनशन पर बैठे

संघर्ष समिति किसान नेता रविंद्र तरखान ने बताया कि आंदोलन के तहत शुक्रवार 20 जून को विधायक सोहन नायक के नेतृत्व में किसान क्रमिक अनशन करेंगे। 21 जून को सांसद कुलदीप इंदौरा किसानों के साथ अनशन पर बैठेंगे। 22 जून को महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए पूर्व विधायक सोना देवी, कमला बिश्नोई, भूपेंद्र कौर दूरना, नमिता सेठी और दुर्गा स्वामी के नेतृत्व में महिलाएं धरनास्थल पर क्रमिक अनशन करेंगी। 23 जून को जिलेभर की सभी अनाज मंडियां बंद रखी जाएंगी। 24 जून को किसान प्रशासन का घेराव करेंगे। आंदोलन के लिए गठित संघर्ष समिति की बैठक में आगे की रणनीति तैयार की गई। किसानों की 15 सदस्यीय संघर्ष समिति ने कलेक्टर डॉ. मंजू को मुख्यमंत्री के नाम 5 सूत्रीय मांगों का ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन में 2500 क्यूसेक पानी की आपूर्ति, बीकानेर कैनाल की सफाई, सिंचाई पुलिस की संयुक्त गश्त, फिरोजपुर फीडर के टेंडर और फसल बीमा क्लेम के भुगतान की मांग की गई। धरना स्थल पर बुधवार को किसानों ने महापड़ाव किया। प्रशासन ने वार्ता के लिए दो बार न्योता भेजा, लेकिन किसानों ने यह स्पष्ट कर दिया कि जब तक गंगनहर में तय हिस्से का 2500 क्यूसेक पानी नहीं पहुंचता, तब तक किसी अन्य मुद्दे पर बातचीत नहीं होगी।

किसान नेता रविंद्र तरखान ने बताया कि आंदोलन का असर दिखने लगा है। बीकानेर कैनाल में पानी का प्रवाह बढ़ा है। पहले जहां 1600 क्यूसेक पानी चल रहा था, वह अब बढ़कर 1833 क्यूसेक हो गया है। पंजाब के सिंचाई अधिकारियों ने आरडी 45 से पानी छोड़ना शुरू किया है। राजस्थान बॉर्डर पर स्थित खखां हैड पर भी पानी की आवक बढ़ रही है। धरना स्थल पर किसान प्रतिनिधिमंडल की कलेक्टर डॉ. मंजू के साथ बैठक हुई। कलेक्टर ने बताया कि वे और पुलिस अधीक्षक गौरव यादव शुक्रवार को पंजाब के फाजिल्का और फिरोजपुर जाकर वहां के जिला कलेक्टर और एसपी के साथ बैठक करेंगे। बीकानेर कैनाल में हो रही पानी चोरी को रोकने के लिए पंजाब प्रशासन पर दबाव बनाया जाएगा।

बैठक में सिंचाई विभाग के अधीक्षण अभियंता धीरज चावला ने बताया कि सिंचाई मंत्री सुरेश सिंह रावत ने 17 जून को पंजाब के जल संसाधन मंत्री से बातचीत की थी। इसके बाद ही 17 जून को पानी की मात्रा 1597 क्यूसेक से बढ़कर 18 जून को 1833 क्यूसेक हो गई।

ईसरदा बांध का 95 प्रतिशत कार्य पूर्ण

टोंक, (निसं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा प्रदेश के हर छोर तक सुचारू पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित कर रहे हैं। मुख्यमंत्री के निर्देशन में सवाईमाधोपुर और दौसा जिले में पेयजल आपूर्ति की दृष्टि से महत्वपूर्ण ईसरदा बांध का निर्माण कार्य मिशन मोड पर किया जा रहा है। बांध के निर्माण का 95 फीसदी कार्य पूर्ण हो चुका है। बांध के पियर्स एवं गेटों का कार्य पूरा हो चुका है। मिट्टी के बांध का आंशिक कार्य ही शेष है।

- सवाईमाधोपुर और दौसा जिले में पेयजल आपूर्ति की दृष्टि से महत्वपूर्ण ईसरदा बांध का निर्माण कार्य मिशन मोड पर किया जा रहा है

वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत गुरुवार को सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय की ओर से मीडिया फील्ड भ्रमण का कार्यक्रम रखा गया। इसमें जिला मुख्यालय के पत्रकारों को निर्माणाधीन ईसरदा बांध का अवलोकन कराया गया। जनसंपर्क अधिकारी अपूर्व शर्मा ने बताया कि इस भ्रमण का उद्देश्य जिले में जल संरचनाओं के कार्यों एवं उससे भविष्य में होने वाले लाभ का प्रत्यक्ष अवलोकन कराना था।

ईसरदा बांध परियोजना के अधिशाषी अभियंता विकास गर्ग ने पत्रकारों को बांध के निर्माण कार्य, फिल्टर प्लांट साइट के कार्यों का निरीक्षण कराया। साथ ही, प्रगतिरत कार्यों, प्रभावित परिवारों को भूमि आवंटन, पुर्नवास अवार्ड कार्य की पूर्णता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। भम्रण के दौरान ईसरदा बांध के सहायक अभियंता अभिषेक लसाड़िया, सौरभ सिंह, योगेश कुमार, कनिष्ठ अभियंता खेमराज सैनी, सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय के वरिष्ठ सहायक अक्षय नागरा, जनसंपर्क कर्मी रिजवान अनीस समेत सहित अन्य मौजूद रहे।

11 केवी विद्युत लाइन के करंट की चपेट से युवक की मौत

सायला, (निसं)। सायला नगर के शांतिपुरा स्थित हार्डवेयर की दुकान के आगे से गुजर रही विद्युत लाइन की चपेट में आने से एक युवक की मौत हो गई। जानकारी के अनुसार पिजोपुरा निवासी कालुराम पुत्र मादाराम देवासी (40 वर्ष) सायला के शांतिपुरा स्थित गजानंद हार्डवेयर में नौकरी करता था, जो गुरुवार शाम करीबन सवा पांच बजे के लगभग दुकान की प्रथम मंजिल पर कार्य कर रहा था। इस दौरान दुकान के आगे से गुजर रही 11केवी विद्युत लाइन की चपेट में आने से घायल हो गया, जिसे दुकान मालिक द्वारा निजी वाहन की सहायता से राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सायला लाया गया, जहां चिकित्सकों ने जांच के बाद मृत घोषित किया। इधर घटना की सूचना पर बड़ी संख्या में देवासी समाज के लोगों सहित व्यापारी अस्पताल में एकत्रित हो गए। सूचना पर एएसआई लादूराम मय पुलिस अस्पताल पहुंची। मृतक के परिजनों के नहीं पहुंचने के कारण पोस्टमार्टम नहीं हो पाया।

देवासी समाज के लोगों सहित व्यापारी अस्पताल में एकत्रित हो गए।

हथियार सहित आरोपी गिरफ्तार

नोखा, (निसं)। यहां जसरासर थाना क्षेत्र में पुलिस ने अवैध हथियार के साथ एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। गश्त के दौरान मुखबिर से मिली सूचना पर पुलिस टीम ने कार्रवाई की। थावरिया के रहने वाले गुलाराम (32) पुत्र हेतराम मेघवाल को एक तलवार के साथ पकड़ा गया। आरोपी के खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है। मामले की जांच सहायक उपनिरीक्षक रवीन्द्र सिंह कर रहे हैं। यह कार्रवाई पुलिस मुख्यालय द्वारा चलाए जा रहे विशेष अभियान और बीकानेर रेंज के एरिया डोमिनेशन अभियान के तहत की गई। अभियान का नेतृत्व आईजी ओमप्रकाश, एसपी कावेन्द्र सिंह सागर और एएसपी (ग्रामीण) कैलाश सिंह सांदू कर रहे हैं। वृताधिकारी हिमांशु शर्मा के सुपरविजन और थानाधिकारी संदीप कुमार के निर्देशन में यह कार्रवाई की गई।

भरतपुर : निजी अस्पताल में मजदूर की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर के कोतवाली थाना क्षेत्र स्थित एक निजी अपस्ताल में मजदूर की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत का मामला सामने आया है। मामले की सूचना मिलते ही

- अस्पताल प्रबंधक का कहना है कि मजदूर की करंट लगने से मौत हुई है
- पिछले तीन-चार माह से अस्पताल में मजदूरी करने आ रहा था
- मृतक आठ बहनों के बीच इकलौता भाई था, तीन छोटे बच्चे भी हैं

भरतपुर के एक निजी अपस्ताल में मजदूर की मौत के बाद परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

मृतक के परिजन बड़ी संख्या में अस्पताल पहुंचे जहां उन्होंने अस्पताल प्रबंधक से बातचीत की तो कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला। मृतक के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। मृतक आठ बहनों के बीच इकलौता भाई था। मृतक के भी तीन छोटे छोटे बच्चे है। मां बाप बुजुर्ग है। मृतक ही पूरे परिवार का पालन- पोषण करता था। कोतवाली थाना पुलिस पर दबाव बनाने का आरोप लगाया है। हालांकि अस्पताल प्रबंधक का कहना मजदूर की करंट लगने से मौत हुई है।

जानकारी के मुताबिक जघीना गेट निवासी 44 वर्षीय रोशन सिंह पुत्र रामस्वरूप मजदूरी का काम करता था। पिछले तीन-चार माह से अस्पताल में मजदूरी करने आ रहा था। सुबह साढ़े आठ बजे अस्पताल की ओर से फोन गया कि रोशन की तबीयत खराब है, आईसीयू में भर्ती है और उपचार जारी है। उसके बाद परिजन अस्पताल पहुंचे जहां रोशन से नहीं मिलने दिया गया। थोड़ी देर में बताया गया कि उसकी मौत हो गई है, लेकिन अस्पताल प्रबंधक की ओर से परिजनों को मौत का कारण नहीं बताया गया तो इससे परिजन नाराज हो गए। सूचना मिलते ही और लोग भी अस्पताल पहुंचे। भीड़ को देख कोतवाली थाना पुलिस मौके पर पहुंची, जहां परिजनों द्वारा कोतवाली थाना पुलिस पर दबाव बनाने का आरोप लगाया है। अभी अस्पताल की ओर से शव को नहीं दिया गया है। परिजन और अस्पताल प्रबंधक के बीज देर शाम तक वार्ता चल रही थी। बेटे की मौत की खबर सुनकर बुजुर्ग मां बाप, पत्नी, बच्चे और बहनों का रो-रो कर बुरा हाल है। निजी अस्पताल के प्रबंधक डॉक्टर लोकेश जिंदल से जब बातचीत हुई तो उन्होंने कहा कि करंट लगने से मजदूर की मौत हुई है। मजदूर के परिजनों से वार्ता चल रही है।

महिला कोरोना पॉजीटिव, अब तक 13 केस मिले

बीकानेर, (निसं)। शहर में कोरोना का एक और पॉजीटिव केस रिपोर्ट हुआ है। मरीज शास्त्रीनगर में रहने वाली 41 वर्ष की महिला है। इसे मिलाकर इस साल अब तक कोरोना के 13 केस आ चुके हैं। पीबीएम हॉस्पिटल की कोविड लैब में 30 मरीजों के सैम्पल लिए गए थे, जिनमें 25 मरीज मेडिसिन विभाग के आउटडोर में दिखाने आए थे। सभी जुकाम, खांसी, बुखार से पीड़ित थे। शेष पांच मरीज विभिन्न वार्डों में भर्ती चल रहे हैं। इनकी रिपोर्ट बुधवार को आई है।

जानकारी के अनुसार इनमें दो मरीज ऐसे भी हैं, जो 13 जून की जांच में पॉजीटिव रिपोर्ट हुए थे। खतूरिया कॉलोनी में रहने वाले दो भाइयों ने दोबारा जांच कराई थी। उनकी रिपोर्ट फिर से पॉजीटिव आई है। हालांकि दोनों ही पहले से ही पॉजीटिव चल रहे थे। इसलिए इन्हें रिकॉर्ड में नहीं लिया गया है। गौरतलब है कि सोमवार को नर्सिंग हास्टल में रहने वाली बीएससी नर्सिंग की एक छात्रा पॉजीटिव रिपोर्ट हुई थी। उसके संपर्क में आने वाली दो अन्य छात्राएं ठीक बताई जा रही हैं। पीबीएम अधीक्षक डॉ. सुरेंद्र कुमार ने बताया कि कई बार मरीज देरी से निगेटिव आते हैं। गंभीर और असाध्य रोगी लंबे समय तक पॉजीटिव रहते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना को चिंताजनक नहीं माना है। भारत में कोविड का जेएन.1 वेरिएंट सबसे आम है।

पांच हजार की रिश्वत लेते एएसआई गिरफ्तार

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर एसीबी की टीम ने बड़ी कार्रवाई करते हुए एक एएसआई को पांच हजार रुपए की रिश्वत राशि लेते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार किया है। एएसआई द्वारा परिवादी की एक्सीडेंटल गाड़ी को न्यायालय से छुड़वाने के आदेश करवाने एवं मुकदमे में मदद करने की एवज में रिश्वत राशि मांगकर परेशान किया जा रहा था। जिसके चलते परिवादी ने एसीबी भरतपुर टीम को अवगत कराया और एसीबी टीम ने सत्यापन करने के बाद रंगे हाथों धर दबोचा। एसीबी द्वारा प्रकरण दर्ज कर अग्रिम अनुसंधान किया जायेगा।

आरोपी एएसआई।

भरतपुर एसीबी एडिशनल एसपी अमित चौधरी ने बताया कि एसीबी चौकी भरतपुर को एक परिवादी ने शिकायत दी कि उकसी एक्सीडेंटल गाड़ी को न्यायालय से छुड़वाने के आदेश करवाने एवं मुकदमे में मदद करने की एवज में आरोपी पृथ्वीराज सहायक उप निरीक्षक पांच हजार रूपये रिश्वत की मांग कर परेशान कर रहा है, जिसका सत्यापन करने के बाद एसीबी की टीम ने ट्रेप कार्रवाई करते हुए गहनोली मोड पर तैनात आरोपी पृथ्वीराज सहायक उप निरीक्षक को पांच हजार रूपये रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों पकड़ा। आरोपी से पूछताछ तथा कार्रवाई जारी है। एसीबी द्वारा मामले में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के अन्तर्गत प्रकरण दर्ज कर अग्रिम अनुसंधान किया जायेगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

राज्य स्तरीय प्रतिभा खोज परीक्षा 2024 (STSE-2024) कक्षा - 10
राज्य स्तरीय गणित एवं विज्ञान प्रतिभा खोज परीक्षा (STSE-2024) कक्षा - 12
राज्य स्तरीय कला एवं वाणिज्य प्रतिभा खोज परीक्षा (STSE-2024) कक्षा - 12
ऑनलाईन प्रवेश पत्र एवं केन्द्र सामग्री जारी करने की सूचना

कक्षा 10 एवं कक्षा 12 हेतु राज्य स्तरीय प्रतिभा खोज परीक्षा (STSE) 2024 का आयोजन रविवार 29.06.2025 को 09.00 AM से 01.00 PM तक राज्य के सभी जिला मुख्यालयों पर निर्धारित परीक्षा केन्द्रों पर किया जाएगा। इस परीक्षा हेतु केन्द्र सामग्री एवं परीक्षार्थियों के प्रवेश पत्र बोर्ड की वेबसाईट www.rajeduboard.rajasthan.gov.in पर अपलोड कर दिये गये है। सभी शाला/संस्था प्रधान उन्हें पूर्व प्रदत्त login ID / password की सहायता से प्रवेश पत्र डाउनलोड करें व हॉर्ड कापी निकालकर प्रमाणीकरण पश्चात् परीक्षार्थियों को वितरित करें। केन्द्राधीक्षक भी निर्धारित प्रकियानुसार केन्द्र सामग्री डाउनलोड करें। ऑनलाईन प्रवेश पत्र एवं केन्द्र सामग्री डाउनलोड संबंधी समस्या हेतु ए.सी.पी.(IT&C) से 0145-2632865, 2627454 पर तथा अन्य सहायता हेतु नियंत्रण कक्ष के दूरभाष नं. 0145-2632866, 867, 868 एवं उप निदेशक (परीक्षा-I) से दूरभाष नं. 0145-2425770 पर सम्पर्क करें।

सचिव

डकैती की योजना बनाते दो युवतियों सहित छह जने गिरफ्तार

पुलिस ने दो पिस्टल, बैस बॉल का डंडा, स्टिक व तीन बाइक भी जब्त की

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले की गंगापुर थाना पुलिस ने भीलवाड़ा-उदयपुर हाइवे पर वाहन चालकों के साथ डकैती की बड़ी वारदात की योजना बनाते दो युवतियों सहित छह लोगों को वारदात से पहले ही गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने इनके कब्जे से दो पिस्टल, बैस बॉल का डंडा, स्टिक व तीन बाइक भी जब्त की है।

गंगापुर पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, गंगापुर पुलिस को गुरुवार सुबह करीब साढ़े पांच बजे डीएसटी से सूचना मिली कि भीलवाड़ा-उदयपुर हाइवे पर वाहन चालकों के साथ डकैती की एक गैंग योजना बना रही है। यह गैंग, हाइवे पर चौधरी होटल के नजदीक से रावण मंगरी जाने वाले लिंक रोड पर झाड़ियों की ओट में छिपी है। सूचना पर गंगापुर थाने से एएसआई रज्जाक मोहम्मद मय जाब्ता मौके पर पहुंचे। जहां दो युवतियों सहित छह लोग वाहन चालकों से डकैती की योजना बनाते मिले। पुलिस ने इन सभी छह लोगों को पकड़ा। पूछताछ करने पर आरोपितों ने खुद को केमूनिया निवासी केसरलाल पुत्र जयसिंह जाट, कोशिथल निवासी मनमोहन पुत्र शंकरसिंह चुंडावत, गंगापुर निवासी नारायण पुत्र हरीशंकर शर्मा व चमनपुरा निवासी कैलाश पुत्र नारायण गुर्जर, जबकि युवतियों ने खुद को पुर थाना इलाके की रहने वाली पायल और चित्तौड़गढ़ के निकुंभ थाना इलाके में रहने वाली संगीता होना बताया। पुलिस ने इन आरोपितों में से केसरलाल व मनमोहन से एक-एक पिस्टल, नारायण से स्टिक व कैलाश से बैस बॉल का डंडा जब्त किया।

गंगापुर थाना पुलिस ने डकैती की योजना बनाते दो युवतियों सहित छह लोगों को गिरफ्तार किया।

- यह गिरोह सोशल साइट इंस्टाग्राम पर भी एक्टिव रहकर लोगों को प्रेम जाल में फांसने का प्रयास कर चुका है

इसके अलावा इनकी तीन बाइक भी पुलिस ने जब्त कर ली। पुलिस ने इन सभी को गिरफ्तार कर केस दर्ज कर लिया। इसकी जांच एएसआई नारायण लाल कर रहे हैं। पुलिस की प्रारंभिक जांच में सामने आया कि यह गिरोह सोशल साइट इंस्टाग्राम पर भी एक्टिव रहकर लोगों को प्रेम जाल में फांसने का प्रयास कर चुकी है, लेकिन सतर्कता के चलते लोग इनके जाल में नहीं फंसे, इसलिए इस गैंग ने युवतियों के जरिये वाहन चालकों को रुकवाकर उनके साथ लूटपाट की यह योजना बनाई थी।

अवैध कोयला भट्ठियों को प्रशासन ने नष्ट कराया

निम्बाहेड़ा क्षेत्र में अवैध रूप से संचालित कोयले की भट्टियों पर कार्रवाई की।

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले की रायला उप तहसील के निम्बाहेड़ा क्षेत्र में अवैध रूप से संचालित कोयले की भट्टियों पर कार्रवाई की गई है। गुरुवार को शाहपुरा विधानसभा क्षेत्र में अवैध रूप से संचालित कोयले की भट्टियों पर प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियों की मौजूदगी में पीला पंजा चलाया गया। क्षेत्र में इन अवैध कोयला भट्ठियों के चलते लगातार शिकायते मिल रही थी। अवैध भट्ठियों को लेकर क्षेत्र के लोगों से अवैध कोयला भट्ठियों से प्रदूषण फैलने का अंदेशा जताया था।

- क्षेत्र के लोगों ने अवैध कोयला भट्ठियों से प्रदूषण फैलने का अंदेशा जताया था

बनेड़ा तहसीलदार नारायण लाल ने बताया कि क्षेत्र में अवैध रूप से संचालित कोयले की भट्टियों के खिलाफ लगातार शिकायत मिल रही थी। जिस पर उपखंड अधिकारी व तहसीलदार को इन पर कार्रवाई करने के निर्देश दे रखे हैं। जिले में पिछले दिवस की क्षेत्र में करीब 500 अवैध कोयला भट्ठियों का संचालन किया जा रहा है। जिसमें से गुरुवार को निंबाहेड़ा कलां में अवैध रूप से संचालित कोयले की भट्टियों को हटाया गया है। कलेक्टर ने कहा कि जिले में किसी प्रकार की अवैध गतिविधियां नहीं होगी। सरकार की जीरो टॉलरेंस की नीति है। अवैध कोयले की भट्टियों के संचालन की जानकारी मिलते ही, तुरंत उन पर एक्शन लिया जाता है। इस कार्रवाई में तहसीलदार नारायण लाल, रायला-बनेड़ा नायब तहसीलदार, गिरदावर, पटवारी देवेंद्र जांगिड़, कुंडिया कलां पटवारी ओमप्रकाश सवालका मौजूद रहे।

पाली में तेज बारिश हुई

पाली शहर में बारिश होने से शहर की सड़कों पर पानी भर गया।

पाली, (नि.सं.)। पाली जिले में मानसून का प्रवेश हो चुका है, दिनभर जिले में बारिश हुई। पाली शहर में हल्की बूंदाबांदी हुई, लेकिन रात 7:45 बजे जोरदार बारिश का दौर शुरू हुआ, जिसमें जो जहां था वहीं फंस गया, जिससे शहर की सड़कों पर पानी भर गया, ऐसे मे लोगों को मुश्किल का सामना करना पड़ा।

तेज बारिश होने से सड़कों पर पानी भर गया। बारिश का दौर करीब 2 घंटे तक चला। जल संसाधन विभाग के नियंत्रण कक्ष से प्राप्त जानकारी के अनुसार पिछले 24 घंटों में प्रात: 8:30 बजे तक सुमेरपुर उपखंड क्षेत्र में सर्वाधिक 28 एमएम बारिश दर्ज की गई। इसी प्रकार रानी में 24 एमएम, देसूरी में 20, मारवाड़ जंक्शन में 15, सोजत में 8, पाली में 6, बाली में 5, रोहट उपखंड क्षेत्र में 3 एमएम बारिश दर्ज की गई।

रोडवेज बस में 34 में से 20 यात्री बिना टिकट मिले

अनूपगढ़, (निसं)। यहां राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के अनूपगढ़ आगार द्वारा बिना टिकट यात्रा पर सख्ती बरतते हुए श्रीगंगानगर से घड़साना जा रही रोडवेज में कार्रवाई की गई। यह कार्रवाई 20 पीएस चेक पॉइंट पर की गई। चेकिंग के दौरान बस में कुल 34 यात्री सवार थे, जिनमें से 20 यात्री बिना टिकट यात्रा करते हुए पकड़े गए। उड़न दस्ते ने मौके पर ही किराया और अधिभार मिलाकर 7,610 रुपए वसूल किए। जिसके बाद बस परिचालक नवीन कुमार बोहित को ऑफ रूट कर दिया।

आगार प्रबंधक राजीव कुमार ने बताया कि विभागीय स्तर पर निलंबन की कार्रवाई की जा रही है। आगार की तरफ से लगातार निरीक्षण किया जा रहा है। इस प्रकार की कार्रवाई का उद्देश्य न केवल राजस्व की रक्षा करना है बल्कि परिचालन में ईमानदारी और पारदर्शिता भी सुनिश्चित करना है। विभाग द्वारा उड़न दस्ते की नियमित चेकिंग जारी रहेगी।

मुख्य प्रबंधक राजीव कुमार ने बताया कि अनूपगढ़ आगार द्वारा मई 2025 में 47 हजार रुपए तथा जून माह में अब तक 23 हजार रुपए की वसूली की जा चुकी है।

वन विभाग की टीम पर अवैध खनन रोकने पर खननकर्ताओं ने किया हमला

पावटा, (निसं)। प्रागपुरा पुलिस थाना क्षेत्र के तहत आने वाले बुचारा वन क्षेत्र के बढियाली की ढाणी में वन विभाग की टीम पर अवैध खनन रोकने पर हमला करने पर वन विभाग ने प्रागपुरा पुलिस थाने में मामला दर्ज करवाया है।

जानकारी के अनुसार वन विभाग की टीम ने अवैध खनन की सूचना पर कार्रवाई करते हुए जेसीबी मशीन और दो ट्रैक्टरों को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन खननकर्ताओं ने टीम पर हमला कर दिया। रेंजर सतपाल ढिलाण, वनपाल शेरसिंह बाकोलिया, वनरक्षक दिनेश गुर्जर, कैलाश यादव, यादराम, अशोक गुर्जर समेत मीर सिंह सहायक वनपाल आदि ने बताया कि प्रागपुरा थाना इलाके के ग्राम पंचायत बुचारा में बढियाली की ढाणी स्थित वन विभाग की भूमि पर मंगलवार सुबह अवैध खनन कर पत्थर निकाले जा रहे थे। जब उनकी टीम ने अवैध खनन को रोकने की कोशिश की, तो खननकर्ताओं ने टीम पर हमला कर दिया। हमलावरों ने वन विभाग की टीम के साथ धक्का-मुक्की की और गाली-गलौज की।

- हमलावरों ने वन विभाग की टीम के साथ धक्का-मुक्की की और गाली-गलौज की
- वनरक्षक दिनेश गुर्जर का मोबाइल छीनने और वर्दी फाड़ने की कोशिश की

हमलावरों ने वनरक्षक दिनेश गुर्जर का मोबाइल छीनने की कोशिश की और वर्दी फाड़ने की कोशिश की। वहीं कुछ महिलाओं ने भी वनकर्मियों पर दवाब बनाते हुए अपने कपड़े फाड़कर उन्हें झूठे मुकदमे में फंसाने की धमकी दी। इस सम्बन्ध में प्रागपुरा पुलिस थाने में मामला दर्ज करवाया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और हमलावरों की पहचान करने की कोशिश कर रही है। वन विभाग की टीम ने अवैध खनन के खिलाफ कार्रवाई जारी रखने का फैसला किया है और आगे भी अवैध खनन को रोकने के लिए छापेमारी की जाएगी।

घटना के दौरान मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई।

लॉरेंस विश्नोई का गुर्गा गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। गुजरात पुलिस ने लॉरेंन्स विश्नोई गैंग के गुर्गे को उदयपुर से गिरफ्तार किया। अहमदाबाद की क्राईम ब्रांच की टीम बुधवार को लॉरेन्स विश्नोई गैंग के गुर्गे मनोज सालवी को उदयपुर से गिरफ्तार अपने साथ ले गई। सोशल मीडिया जरिये लॉरेन्स की गैग के संपर्क में आने के बाद मिले निर्देशों का पालन कर मनोज सालवी ने तस्करी कर राजस्थान सहित कई राज्यों में हथियार सप्लाई करना शुरू कर दिया। इसको लेकर मनोज के खिलाफ कई राज्यों में प्रकरण दर्ज है। मनोज सालवी ने किशोर अवस्था में अपराध करना शुरू किया था। अपनी इच्छानुसार सोशल मीडिया जरिये लॉरेंस गैंग के संपर्क में आया था इस दौरान लॉरेंस के भाई अनमोल से मोबाइल पर बातचीत करने की जानकारी सामने आई है।

जानलेवा हमले के आरोपी को 10 साल का कारावास

बीकानेर, (निसं)। अपर सत्र न्यायाधीश संख्या 5 के पीठासीन अधिकारी अनुभव सिडाना ने जानलेवा हमले के एक मामले में आरोपी को 10 साल के कारावास और 1.11 लाख रुपए की सजा सुनाई है। यह राशि पीड़ित पवन को दी जाएगी।

- 1.11 लाख रुपए की सजा सुनाई है, यह राशि पीड़ित को दी जाएगी

परिवादी रामकिसन ने एक अक्टूबर, 2015 को नापासर पुलिस थाने में रिपोर्ट दी थी कि वह हरिरामपुरा में रहता है। उसका चाचा आरोपी बजरंगलाल अपने ससुराल नोखा में रह रहा है। आरोपी चाचा नोखा से अपने भाइयों तेजाराम, प्रभुराम, ओमप्रकाश के पास आया। परिवादी और उसका परिवार चाचा तेजाराम के मकान के पास रहते हैं। रात को 11 बजे आरोपी बजरंगलाल ने परिवादी की मां को गालियां निकाली। उसका भाई पवन व मां आरोपी को समझाने तेजाराम के घर गए। आरोपी ने कुल्हाड़ी से पवन पर वार कर दिया जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। इस मामले में सुनवाई के बाद बजरंगलाल को सजा सुनाई है। अभियोजन पक्ष की ओर से कोर्ट में 11 गवाहों के बयान हुए। कोर्ट ने पीड़ित प्रतिकर स्कीम में क्षतिपूर्ति राशि देने की अनुशंसा जिला विधिक प्राधिकरण से की है।

लाखों की नकदी हड़पी

उदयपुर, (निसं)। पुत्र को नौकरी के लिए विदेश भेजने का झांसा देकर पीड़ित से लाखों की नकदी हड़पने वाले के खिलाफ पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया। पीड़ित वेलासुरा पत्नी राजेन्द्र सुरा निवासी 6 ए मार्वल वार्टर पार्क गोवर्धन विलास ने आरोपी गुरमीत निवासी ओल्ड गोविन्दपुरा एक्स कृष्णा नगर पूर्वी दिल्ली सहित अन्य आरोपियों के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया। जिसमें पीर्डित ने बताया कि मरे पुत्र दिव्यांशु को युके में नौकरी करने के लिए गुगल पर सर्च किया तो आरोपी की कंपनी के दिये नंबर पर संपर्क किया।

बिना लाइसेंस के यूरिया भंडारण का मामला सामने आया

बीकानेर, (निसं)। कृषि विभाग की संयुक्त कार्रवाई में छत्तरगढ़ क्षेत्र में मंडी आरडी-465 स्थित बुडिया एंड कंपनी पर बड़ी मात्रा में बिना लाइसेंस के यूरिया भंडारण का मामला सामने आया है। संयुक्त निदेशक कृषि (गुण नियंत्रण), कृषि आयुक्तालय राजस्थान के. के. मंगल तथा छत्तरगढ़ एसडीएम पवन कुमार के निर्देश पर की गई कार्रवाई में कुल 368 कट्टे यूरिया के जब्त किए गए। यह यूरिया श्रीराम फर्टिलाइज़र की ओर से उत्पादित था, जिसे ट्रक से मंडी लाया गया था। मौके पर पहुंची टीम ने पाया कि बुडिया एंड कंपनी के पास उर्वरक विक्रय का वैध लाइसेंस नहीं है। जांच के दौरान यह भी सामने आया कि ट्रक में लदे यूरिया पर अनिल ट्रेडिंग कम्पनी, घड़साना के नाम की बिल्टी मौजूद थी, ट्रक सूरतगढ़ रैक पॉइंट से रवाना हुआ तथा घड़साना जाना था लेकिन यह घड़साना के स्थान पर मंडी आरडी-465 स्थित बुडिया एंड कंपनी पर पहुंच गया, जिससे कालाबाजारी का शक गहराया। अवैध भण्डारण, अवैध परिवहन व कालाबाजारी की आशंका के कारण जब्ती की कार्यवाही की गई।

- यूरिया की कालाबाजारी पर कृषि विभाग की कार्रवाई, 368 कट्टे यूरिया के जब्त

सहायक निदेशक कृषि (मुख्यालय) सुरेन्द्र कुमार मारू व कृषि अधिकारी छत्तरगढ़ सोमेश कुमार तंवर की ओर से ये कार्रवाई की गई कार्रवाई के दौरान प्रेम कुमार भांभू सहायक कृषि अधिकारी, हड़मान राम , मूलाराम और राकेश आदि कृषि पर्यवेक्षक मौके पर मौजूद थे। वहीं प्रशासन की ओर से भैरूलाल (नायब तहसीलदार) और धर्मेन्द्र मीणा के साथ कई पुलिसकर्मी भी कार्रवाई में शामिल हुए।

कृषि विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में 343 विद्यार्थियों को डिग्रियां प्रदान की

कोटा, (निसं)। कृषि विश्वविद्यालय का 8वां दीक्षांत समारोह गुरुवार को राज्य कृषि प्रबंध संस्थान (सिआम) ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने की। समारोह में अकादमिक वर्ष 2023-24 की स्नातक, स्नातकोत्तर एवं विद्यावाचस्पति परीक्षाओं में उत्तीर्ण 343 अभ्यर्थियों को उपाधियां प्रदान की गई। इनमें से 287 कृषि, उद्यानिकी एवं वानिकी स्नातक, 44 कृषि, उद्यानिकी एवं वानिकी स्नातकोत्तर तथा 12 कृषि एवं उद्यानिकी विद्यावाचस्पति के अभ्यर्थी शामिल हैं। दीक्षांत समारोह में कुल 14 अभ्यर्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किये गये, जिनमें से 09 स्वर्ण पदक छात्राओं तथा 05 छात्रों ने प्राप्त किए। आरती चन्द्रन स्नातकोत्तर (वानिकी), वनोत्पाद एवं उपयोग को कुलाधिपति स्वर्ण पदक से तथा ट्विंकल वर्मा स्नातक (ऑनर्स) कृषि को कुलपति स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया।

राज्यपाल बागड़े ने अपने उद्बोधन में कहा कि दीक्षांत शिक्षा का अंत नहीं बल्कि यह जीवन में एक नए अध्याय की शुरुआत है। उन्होंने कहा कि बेटियां आगे बढ़ेंगी तभी समाज समुचित रूप में उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है। मुझे खुशी है कि राजस्थान में बेटियां उच्च शिक्षा में निरंतर आगे बढ़ रही है।

राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने समारोह में विद्यार्थियों को डिग्रियां प्रदान की।

राज्यपाल बागड़े ने कहा कि विश्व में जनसंख्या के अनुपात में अन्न उत्पादन की अत्यंत आवश्यकता है, जिसके लिए गुणवत्तापूर्ण खेती अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि ज्यादा पैदावार के लिए रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग किया जा रहा है, जिससे जैविक तंत्र, पारिस्थितिकी एवं मानव स्वास्थ्य को खतरा है। अत: रासायनिक उर्वरकों का उपयोग कम कर प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित खेती को अपनाना होगा। उन्होंने कहा कि जैविक खेती से अधिक उत्पादन कैसे लिया जाए, इसके लिए हमारे कृषि विश्वविद्यालयों को ध्यान देने की जरूरत है। कृषि वैज्ञानिकों को इस हेतु चिंतन एवं मनन करने की आवश्यता है। उन्होंने कृषि और किसान से जुड़े सहायक व्यवसायों को बढ़ावा देने की आवश्यकता जताई, जिनमें विशेष रूप से डेयरी उद्योग का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, नवीनतम तकनीकों एवं व्यावहारिक समाधान के प्रसार का सशक्त केन्द्र बनें। विश्वविद्यालय किसानों के हित में संचालित योजनाओं को प्रभावी रूप से जमीन तक पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभाए। उन्होंने कहा कि हाड़ौती की धरती पर उच्च गुणवत्ता वाला बासमती चावल उगाया जाता है, जिसकी आपूर्ति विश्व के कई देशों में की जाती है। इस उपलब्धि के लिए यहां के किसान धन्यवाद के पात्र हैं।

- रासायनिक उर्वरकों का उपयोग कम कर प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित खेती को अपनाना होगा : राज्यपाल बागड़े

अष्टम दीक्षांत समारोह में कृषि विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ.अभय कुमार व्यास, राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा के कुलगुरु प्रो.एस.के. सिंह, कोटा विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. भगवती प्रसाद सारस्वत, कुलसचिव मनीषा तिवारी, प्रबंध मण्डल सदस्य, विद्या परिषद, महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, विश्वविद्यालय के निदेशक, वित्त नियंत्रक, परीक्षा नियंत्रक, सम्पदा अधिकारी एवं विश्वविद्यालय की सभी इकाईयों के अधिकारी व कर्मचारीगण एवं सेवानिवृत अधिकारी उपस्थित रहे।

फरार तांत्रिक को तेलंगाना से पकड़ा, यूपी से दो साथी गिरफ्तार

तंत्र-मंत्र से रुपए दोगुना करने का झांसा देने और प्रसाद के रूप में जहरीला हलवा खिलाकर तीन लोगों की मौत का मामला

बीकानेर, (निसं)। जिले के खाजूवाला में तंत्र-मंत्र से रुपए दोगुना करने का झांसा देने और प्रसाद के रूप में जहरीला हलवा खिलाकर तीन लोगों की मौत के मामले में फरार तांत्रिक को तेलंगाना में पकड़ा गया है। उसके दो साथियों को भी यूपी से गिरफ्त में लिया गया है।

खाजूवाला में रुपए दोगुना करने पहुंचे तांत्रिक बी. शिवा ने प्रसाद के रूप में जहरीला हलवा खिलाया था जिससे गफ्फार खां, तांत्रिक के गिरोह में शामिल शैतानसिंह और विक्रमसिंह की मौत हो गई थी। गफ्फार खां के घर में 12 जून को तांत्रिक क्रिया की गई थी। अगले दिन रुपए दोगुना करने के नाम पर झांसा देने का राज खुलने पर गफ्फार के परिजनों ने तांत्रिक की धुनाई की और उसे घर से निकालकर 50 लाख रुपए अपने कब्जे में कर लिए थे। पुलिस ने रुपए बरामद कर लिए और फरार तांत्रिक को तेलंगाना के निजामाबाद से हिरासत में लिया है। पुलिस लगातार तांत्रिक के पीछे थी। उसके निजामाबाद पहुंचने पर वहां की पुलिस की मदद से उसे हिरासत में लिया है। तांत्रिक के अलावा उसके साथी यूपी के आजमगढ़ निवासी धर्मेन्द्र और गोरखपुर निवासी जितेन्द्र तिवारी को भी गिरफ्त में लिया गया है। तीनों को बीकानेर लाया जा रहा है। पुलिस गुरुवार को इस मामले में खुलासा करेगी। अभियुक्तों में शामिल लोग एक-दूसरे के संपर्क में थे जिन्होंने रुपए दोगुना करने के झांसा देकर बड़ी रकम हड़पने की प्लानिंग बनाई। तांत्रिक बी. शिवा और झारखंड निवासी मनोज वर्मा एक-दूसरे के परिचित थे। यूपी में गोरखपुर निवासी जितेन्द्र तिवारी और आजमगढ़ निवासी धर्मेन्द्र भी मनोज वर्मा के संपर्क में थे।

जोधपुर निवासी रामस्वरूप भी उसके संपर्क में था जो अजमेर निवासी शैतानसिंह का भी जानकार था। शैतानसिंह और खाजूवाला निवासी गफ्फार एक-दूसरे का जानते थे। रुपए दो गुना करने के नाम पर झांसा देकर एक करोड़ रुपए हड़पने की प्लानिंग बनाई गई जिसमें शैतानसिंह ने अजमेर निवासी विक्रमसिंह को भी शामिल कर लिया। तांत्रिक बी. शिवा अपने ड्राइवर के साथ और यूपी निवासी धर्मेन्द्र और जितेन्द्र अलग गाड़ी में 6 जून को अजमेर पहुंचे। तांत्रिक जयपुर गया और वहां से वापस अजमेर पहुंचा। अजमेर से 10 जून को खाजूवाला आए थे।

पुलिस ने तंत्र-मंत्र से रुपए दोगुना करने और तीन लोगों की मौत से जुड़े इस मामले में अब तक तीन अभियुक्त तांत्रिक के साथी जोधपुर निवासी रामस्वरूप, मृतक गफ्फार खां के दामाद मुश्ताक, साढू के पुत्र यूसुफ को गिरफ्तार किया है। मुश्ताक को 19 जून तक रिमांड पर है। रामस्वरूप और यूसुफ को कोर्ट में पेश कर चार दिन के रिमांड पर लिया है। इस मामले में तांत्रिक के साथी मनोज वर्मा, गफ्फार के पुत्र सलमान सहित अन्य की गिरफ्तारी बाकी है। इसके अलावा तांत्रिक और उसके दो साथियों को भी गिरफ्तार किया जाएगा।

संक्षिप्त

मीटिंग आयोजित

भरतपुर (निस)। भरतपुर चौम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज की मीटिंग का आयोजन चौम्बर भवन नई मंडी में किया गया। जिसमे सर्प्रथम अध्यक्ष कृष्ण मुरारी अठावाल द्वारा सभी का स्वागत एवं अभिनदंन किया गया। महामंत्री राहुल बंसल द्वारा गत मीटिंग में दिए गए प्रस्ताव और निर्णय की जानकारी दी गयी। मीटिंग में कोषाध्यक्ष द्वारा नए मेंबर और आय व्यय की जानकारी दी गयी। सुप्रीम कोर्ट द्वारा टी टी जेड क्षेत्र में पोल्लुशण दवब पर लगयी गयी रोक के लिए सुप्रीम कोर्ट में अपना पक्ष रखने और राहत के लिए वकील नियुक्त करने की चर्चा की गयी। राज्य और केंद्र सरकार द्वारा इसमें मदद करने के लिए मुख्यमंत्री,स्थानीय विधायक और सांसद के साथ केंद्रीय मंत्री से मिलने के लिए एक प्रतिनिधि मंडल बनाया जाए इसके अध्यक्ष को कमेटी बनाने के लिए बोला गया। चैम्बर भवन के नवनीकरण और चौम्बर भवन का कुछ हिस्सा किसी बैंक या सरकारी मीटिंग में ओमप्रकाश सिंघल ,किशोर खंडेलवाल ,शंकरलाल अठावाल ,सुभाष जिंदल ,प्रितेश गर्ग ,रुपेश बंसल ,राकेश मित्तल ,रविंद्र गोयल ,अमित सिंघल उपस्थित रहे। मीटिंग का संचालन और धन्यवाद महामंत्री राहुल बंसल द्वारा किया गया।

योगाभ्यास किया

भरतपुर (निस)। अनंत महिला शक्ति भरतपुर द्वारा गुरूवार को कृष्णा नगर पार्क के मंदिर प्रांगण में योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। अनंत शक्ति अध्यक्ष पूनम चौधरी ने बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना एवं नियमित योग अभ्यास को बढ़ावा देना है। योग से शारीरिक विकास होता है व मानसिक व आध्यात्मिक शान्ति मिलती है। पंतजलि योग के स्वास्थ्य लाभों को देखते हुए यह पूरे विश्व में प्रचलित हुआ है। कार्यक्रम योग प्रशिक्षक मुनेश चौधरी के निर्देशन में संपन्न हुआ। उन्होंने सरल व प्रभावी आसनों का अभ्यास कराते हुए योग के शारीरिक एवं मानसिक लाभों के बारे में बताया। संगठन द्वारा उनका पटका पहनाकर व मोमेंटो देकर सम्मान किया। कार्यक्रम में महिलाओं ने योग की विभिन्न विधाओं को सीखा। कार्यक्रम में सचिव साधना, कोषाध्यक्ष आशा राज, प्रतिभा सिंह, रेनू सोइन, साधना शर्मा, रितु चौहान, राखी सहित 40 महिलाएं उपस्थित रही।

डागुर बने विभाग संयोजक

हिंडौन सिटी। करौली जिले की उपतहसील शेरपुर निवासी योगेंद्र डागुर को एबीवीपी सवाई माधोपुर विभाग संयोजक का दायित्व दिया गया है। एबीवीपी के जयपुर प्रान्त का अभ्यास वर्ग दिनांक 13 जून से 16 जून 2025 को सीकर में आयोजित हुआ, जिसमें प्रान्त अध्यक्ष डॉ जिनेश जी ने संगठन के प्रशासन की दृष्टि से प्रान्त के विविध दायित्वों की घोषणा की। योगेंद्र डागुर छात्र जीवन में 2019 से अभाविप के संपर्क में आए और 2020 से लगातार दायित्ववान है डागुर अब सवाई माधोपुर,गंगापुर, करौली जिलों में विभाग संयोजक की भूमिका में कार्य करेंगे इससे पूर्व परिषद में इकाई अध्यक्ष नगर मंत्री, जिला समिति सदस्य, जिला संयोजक जैसे दायित्वों का निर्वहन कर चुके हैं। गत 2023 मे जिला संयोजक बनने के बाद संगठन कार्य में अच्छा योगदान दिया

4 घण्टे बंद रहेगी बिजली सप्लाई

करौली। करौली जिला मुख्यालय पर मरम्मत कार्य होने के कारण आज शुक्रवार को प्रात: करौली सिटी सहित ठाामीण क्षेत्रो मे 4 घण्टे बिजली सप्लाई बंद रहेगी। 132 के0वी0 जी0एस0एस0 के सहायक अभियंता कुलदीप कुमार उपाध्याय ने बताया कि राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड करौली पर रख रखाव एवं मरम्मत कार्य हेतु आज शूक्रवार को 132 केवी सव स्टेशन करौली से निकलने वाले फीडर 132 केवी मण्डरायल,33 एवं 11 ठाामीण व शहरी फीडर जैसे कि 33 केवी गुडला,चैनपुर,फतेहपुर,सायपुर,मण्डरायल,करौली सिटी एवं 11 केवी फीडर रीको,दीपपुरा, मैगजीन,हिण्डौन गेट,शिकारगंज,स्टेडियम आदि फीडरो की प्रात: 5:30 बजे से 9:30 बजे तक सप्लाई बंद रहेगी।

योग समारोह का आयोजन

भरतपुर (निस)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को होम्यो आयुष्मान आरोग्य मंदिर पपरेरा डीग द्वारा योग समारोह का आयोजन किया जा रहा है डीग जिले के पपरेरा कस्बा में आंगनबाड़ी के सामने ठााउंड पर सुबह प्रात:7 से 8 बजे तक किया जाएगा। यह जानकारी होम्यो डॉक्टर एकता अठावाल ने दी।

विधायक डॉ. गर्ग ने जल भराव की समस्या से निजात दिलाने के कलक्टर को निर्देश दिये

■ रीको ओवर ब्रिज कार्य पूर्ण होने तक वैकल्पिक मार्ग बनाने पर भी दिया जोर।

भरतपुर (निस)। शहर में गत दिवस हुई बरसात से कई स्थानों पर हुये जल भराव से आम जन को हो रही परेशानी को लेकर पूर्व मंत्री व भरतपुर विधायक डॉ. सुभाष गर्ग ने जिला कलक्टर एवं नगर निगम आयुक्त से पम्प सेट लगवाकर जल निकासी की व्यवस्था कराने को कहा है साथ ही आये दिन होने वाली जलभराव की परेशानियों से निजात दिलाने के लिये आपदा टीम का गठन कर त्वरित कार्यवाही कर स्थानीये लोगों को राहत प्रदान करने पर जोर दिया है। इसके अलावा रीको रोड पर ओवर ब्रिज बनाने के लिये किये जा रहे कार्य से आवागमन में लोगों को हो रही परेशानी को देखते हुये वैकल्पिक मार्ग बनाने के लिये भी जिला कलक्टर को कहा गया है।

डॉ. गर्ग ने जिला कलक्टर एवं नगर निगम आयुक्त से कहा है कि गत दिवस भरतपुर शहर में हुई बरसात से शहर के नमक कटरा, आदर्श नगर कॉलोनी, चांदपोल गेट, गणेश नगर, आनन्द नगर, दुर्गा नगर, तिलक नगर, पैराडाइज कॉलोनी, गिरीश बिहार, पुष्प वाटिका कॉलोनी सहित अन्य कॉलोनी व मौहल्लों में जल भराव होने से स्थानीये लोगों को परेशानी का सामना करना पडा रहा है। लोगों की समस्याओं को देखते हुये इन स्थानों पर पम्प सेट लगवाकर स्थानीय लोगों को राहत दिलाई जाये ताकि क्षेत्र के लोगों को किसी तरह की परेशानी का सामना ना करना पडे। इसके साथ ही डॉ. गर्ग ने अधिकारियों से आपदा टीम गठित करने की सलाह देते हुये कहा है कि जैसे ही बरसात अथवा अन्य आपदा आने पर आपदा सक्रिय हो जाये और लोगों होने वाली परेशानी से निजात दिला सकें।

इसी तरह डॉ. गर्ग ने जिला कलक्टर से भरतपुर रीको रोड स्थित रेलवे ओवर ब्रिज का कार्य होने की वजह से लोगों के आवागमन में हो रही परेशानी को देखते हुये वैकल्पिक मार्ग बनाने के लिये कहा। उन्होंने कहा कि रेलवे फाटक संख्या 38 पर ओवर ब्रिज बनाया जा रहा है। इस मार्ग से कई गांवों का जुडाव है और भारी वाहनों का भी इस मार्ग से आवागमन होता है। ओवर ब्रिज कार्य शुरू होने से लोगों को आने जाने में परेशानी का सामना करना पडा है। खुदाई कार्य होने से सडक मार्ग भी पूरी तरह से क्षितठास्त हो गया है ।

करौली को प्रथम स्थान

करौली । करौली जिले को परिवार कल्याण साधनों के कुशल प्रबंधन के लिए एफपीएलएमआईएस सॉफ्टवेयर में श्रेष्ठ उपलब्धि के प्रथम अवार्ड प्रदान किया गया। राज्य स्तरीय कार्यक्रम में डिप्टी सीएमएचओ परिवार कल्याण डॉ सतीश चंद मीना, डीईओ छैल बिहारी सहित यूएनएफपीए प्रतिनिधि मनोज जांगिड़ ने प्राप्त किया। गौरतलब है कि यह अवार्ड जिले को एफपीएलएमआईएस सॉफ्टवेयर में चिकित्सा संस्थानों पर शून्य स्टॉक आउट,परिवार कल्याण साधनों का अवधिपार नही होना, शत् प्रतिशत एएनएम व आशाओं द्वारा परिवार नियोजन साधनों की ऑनलाइन मांग आदि बिंदुओं पर उत्कर्ष कार्य के लिए प्रदान किया गया है। सीएमएचओ डॉ जयंतीलाल मीना ने डिप्टी सीएमएचओ सहित फील्ड के कार्मिको को बधाई देते हुए टॉप पर बने रहने की इस प्रक्रिया को आगे भी इसी प्रकार जारी रखने के अपेक्षा जताई है।

नाला सफाई नहीं होने से जलभराव

भरतपुर (निस)। शहर के प्रमुख मार्ग कुम्हेर गेट पेट्रोल पंप से अनाह गेट टूरिस्ट होटल तक नाला सफाई का कार्य लंबे समय से नहीं हुआ है,जिसके चलते पूरे मार्ग पर जलभराव की स्थिति बन गई है। नालों का पानी सड़क तक बह रहा है और दुकानों के सामने जमा हो रहा है। इससे क्षेत्र के व्यापारियों और आमजन को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

स्थानीय दुकानदारों ने बताया कि अभी मानसून शुरू नहीं हुआ है, फिर भी सड़कें बाढ़ जैसी स्थिति में हैं। पानी दुकानों के सामने भर जाने से ठााहक नहीं आ पा रहे और व्यापार प्रभावित हो रहा है। अगर समय रहते नगर निगम द्वारा सफाई नहीं करवाई गई तो आगामी दिनों में स्थिति और भी बदतर हो सकती है।

दुकानदारों और नागरिकों ने नगर निगम आयुक्त से आठाह किया है कि इस मुख्य मार्ग की नाला सफाई कार्य को प्राथमिकता पर लेकर जल्द से जल्द समस्या का समाधान किया जाए ताकि आगामी मानसून से पहले आमजन को राहत मिल सके।

सार-समाचार

'संकल्प से सिद्धी' तक अभियान पर कार्यशाला

भरतपुर (निस)। मोदी सरकार के 11वर्ष पूर्ण होने पर पूरे देष में व्यापक रूप से चलाए जा रहे संकल्प से सिद्धी तक अभियान के अंतर्गत गोविन्द नगर स्थित बलभद्र स्कूल में पण्डित दीनदयाल उपाध्याय मण्डल द्वारा कार्यषाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथी भाजपा जिला अध्यक्ष षिवानीदायमा तथा विषिष्ठ अतिथि प्रदेष प्रवक्ता शैलेश कौषिक, जिला उपाध्यक्ष श्याम सुंदर गौड़ एवं मनोज खण्डेलवाल, जिला महामंत्री बृजेष अठावाल, जिला प्रवक्ता डॉ. वीरेन्द्र पचौरी, देवेन्द्र चामण्ड, उत्तम शर्मा, किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष गौरव सरपंच, आईटी जिला संयोजक अनिल गोयल रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मण्डल संयोजक चन्द्रवीरजघीना ने की। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता जिलाध्यक्ष षिवानीदायमा ने अपने उद्बोदन में मोदी सरकार की 11वर्श की उपलब्धियों का बखान करते हुए बताया कि मोदी सरकार ने किचिन से लेकर आवास तक की सुविधाएं आम जनता को मुहैया कराई हैं। किसानों को खाद-बीज पर सब्सिडी उपलब्ध कराई जा रही है। प्राकृतिक प्रकोप की क्षित की भरपाई के लिए फसल बीमा योजना लागू की है। किसान सम्मान निधि की राषि बढ़ाकर किसानों को ऐसा तोहफा दिया है कि किसान मोदी सरकार की नीति-रीतियों से गदगद हैं। देष की सुरक्षा को मजबूती प्रदान की है और विष्व पटल पर भारत ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। कार्यक्रम में योग दिवस की तैयारियों को लेकर पूर्वाभ्यास किया गया। योग कार्यक्रम का संचालन स्कूल प्रधानाचार्य दीप्ति जैन ने किया। कार्यक्रम में सुनील सहनावली, देवराज सिंह, बृजभूषण षर्मा, राकेष, डॉ. लेखराज, कृष्णा षर्मा एड., अंकित शर्मा, जयपाल शर्मा, गिरीष भारद्वाज, वेदोलवानिया, दीपूसिकरौदा, मनीश पहलवान, राकेष वर्मा, योगा सहनावली आदि गण्यमान नागरिक उपस्थित थे। आगन्तुकों को मण्डल सह संयोजक वीरेन्द्र गुर्जर ने धनरूवाद प्रस्ताव दिया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन कृष्णा षर्मा ने किया।

समय प्रबंधन और अनुशासन को बताया सफलता की कुंजी

भरतपुर (निस)। राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड द्वारा अठासेन महिला विद्यापीठ में आयोजित कौशल विकास अभिरुचि शिविर में सहा. राज्य आयुक्त आलोक शर्मा ने कहा कि जीवन में वही लोग सफल होते हैं जो समय प्रबंधन, अनुशासन एवं अतिरिक्त प्रयास करते हैं। सफलता का मायना प्रसन्नता, सद्भाव, सहयोग, सदाचार, खुशी होती है।

समीक्षा बैठक का आयोजन

भरतपुर (निस)। राजस्थान ठाामीण बैंक के क्षेत्रीय कार्यालय भरतपुर द्वारा शाखा प्रबंधको की व्यवसाय समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। स्मारोह की अध्यक्षता करते हुए बैंक महाप्रबंधक शम्भू दयाल महावर जीने कहा कि किसानों को विकास की मुख्यधारा से जोड़कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में बैंकों की भूमिका महत्वपूर्ण है और प्रदेश में राजस्थान ठाामीण बैंक पूरी निष्ठा के साथ अपनी सक्रिय भागीदारी निभा रहा है

बैंक महाप्रबंधक शम्भू दयाल महावर जीने क्षेत्र की सभी 72 शाखाओं के शाखा प्रबंधक एवं अन्य उपस्थित स्टाफ को संबोधित करते हुए बैंक द्वारा उपलब्ध करायी जा रही डिजीटल सेवाओं का लाभ त्वरित रूप से जन सामान्य को उपलब्ध कराने एवं बैंक द्वारा आवास, वाहन एव व्यापार ऋण में ब्याज सहित प्रोसेसिंग प्रभार में दी जा रही विशेष रियायतों का लाभ अधिकाधिक ठााहकों तक पहुँचाने का आ ान किया। उन्होंने बताया कि वर्तमान में बैंक राजस्थान राज्य के 41 जिलों में 1593 शाखाओं, के विस्तृत नेटवर्क के साथ ठाामीण व शहरी क्षेत्रों में लगभग 02 करोड़ से अधिक ठााहकों को सेवाएं दे रहा है उन्होंने कहा कि बैंक भारत सरकार की वित्तीय समावेशन योजना, पीएम सूर्यघर योजना , पीएम विश्वकर्मा योजनान्तर्गत अहम भूमिका निभाते हुए उत्कृष्ट कार्य कर रहा है स्वयं सहायता समूहो को वित्तपोषित करने मे बैंक अहम भूमिका निभा रहा है ।

क्षेत्रीय प्रबन्धक सुनील कुमार अठावाल, क्षेत्री यव्यवसाय कार्यालय भरतपुर ने क्षेत्र की व्यावसायिक उपलब्धियों के बारे में बताते हुए कहा कि सभी औधोगिक व संस्थागत ग्राहकों को भी स्तरीय बैंकिंग सेवायें प्रदान करने हेतु बैंक प्रतिबद्ध है।

स्वास्थ्य सेवाओं पर चर्चा

भरतपुर (निस)। जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक बुधवार को जिला कलेक्टर अमित यादव की अध्यक्षता में कलेक्टर सभागार में सम्पन्न हुई। उन्होंने विभागीय योजनाओं की समीक्षा कहते हुए कहा कि स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण विभाग के कार्यों में लापरवाही या उदासीनता कतई क्षम्य नहीं होगा। बैठक में जिला कलेक्टर ने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों और चिकित्सा संस्थानों के प्रभारियों को यह सुनिश्चित करने के आदेश दिए कि कोई भी योग्य और जरूरतमंद व्यक्ति स्वास्थ्य विभाग की किसी योजना के लाभ से वंचित नही रह पाए। उसकी यह शिकायत नही आई चाहिए कि उसे अस्पताल में दवा न, जांच ,उपचार और प्रोत्साहन राशि नही मिली।

उन्होंने सभी चिकित्सा संस्थानों पर संस्थागत प्रसव को बढ़ाने, आयुष्मान कार्ड के पात्र लाभार्थियों की शत प्रतिशत ई केवाईसी एएनएम व आशाओं के माध्यम से करवाने, आयुष्मान कार्ड वितरण करने, मौसमी बीमारियों पर विशेष ध्यान देने, एएनसी करने, चिकित्सा संस्थान पर उपस्थित रहने, टीकाकरण कवरेज पूर्ण करने, यू विन में एंट्री करने, एचपीआर आईडी बनाने के निर्देश दिए। जिला कलेक्टर ने सूचकांको में सुधार के लिए कार्य योजना अनुसार कार्य करने के निर्देश दिए तथा टीकाकरण कार्यक्रम के अंतर्गत सभी गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों को समय अनुसार सभी टीके पूर्ण करने साथ ही छूटे हुए बच्चों का टीकाकरण करने के निर्देश दिये।

व्यर्थ बह रहा है पेयजल

करौली (निंसं.) करौली के चिकने फर्स के ऊपर चैराहे से विद्यालय को जाने वाले रास्ते की पाइपलाइन काफी पुरानी होने के कारण लाखों लीटर पेयजल रोज व्यर्थ बह रहा है।

चिकना फर्स निवासी शिवकुमार शर्मा हरदैनिया, शैलेंद्र, सुनील शर्मा, देवेंद्र पांचाल, जगदीश सोनी, आशा सोनी, राजू सहित कई लोगों ने अतिरिक्त जिला कलेक्टर को ज्ञापन पेश कर बताया कि चिकना फर्स के ऊपर चैराहे से सरकारी विद्यालय के रास्ते जाने वाली पानी की पाइपलाइन का टी पॉइंट काफी पुराना हो गया है।

इस चैराहे पर टी पॉइंट से 8 से 10 नलो के बराबर पानी रोजाना व्यर्थ बह जाता है इस टी पॉइंट को नया बदलवाने और लीकेज रोकने को लेकर लोगों ने मांग कि है।

जन आंदोलन का संदेश

भरतपुर (निस)। होम्योपैथिक चिकित्सक वेलफेयर ट्रस्ट द्वारा नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से एक विशेष पोस्टर विमोचन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। होम्योपैथिक चिकित्सक वेलफेयर ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ रविन्द्र कुन्तल ने नशे के बढ़ते चलन को समाज के लिए गंभीर चिंता का विषय बताते हुए इसे रोकने के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अखिल भारतीय पंचायत परिषद के राष्ट्रीय सचिव लक्ष्मीकांत तिवारी ने कहा कि नशा न केवल व्यक्ति के शरीर और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि उसके परिवार और समाज पर भी गहरा नकारात्मक प्रभाव डालता है। हम इस अभियान के माध्यम से प्रत्येक वर्ग को जोड़ना चाहते हैं, विशेषकर युवा पीढ़ी को जागरूक करना हमारा मुख्य उद्देश्य है। महासचिव डॉ. चिराग गुप्ता ने बताया कि यह अभियान केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक जन आंदोलन है। पोस्टर, व्याख्यान, चिकित्सा शिविरों एवं सोशल मीडिया के माध्यम से समाज में सकारात्मक संदेश पहुँचाया जाएगा। कार्यक्रम संयोजक डॉ. अंकुर सिंह ने कहा कि हमने विशेष रूप से ऐसे संदेशों को पोस्टर में शामिल किया है जो आमजन को सीधे तौर पर प्रभावित करें और उन्हें नशा छोड़ने के लिए प्रेरित करें। जल्द ही इसे स्कूल, कॉलेज व सार्वजनिक स्थलों पर प्रदर्शित किया जाएगा। कार्यक्रम में शहर के होम्योपैथिक चिकित्सक, समाजसेवी एवं जागरूक नागरिक मौजूद रहे। सभी ने नशा मुक्त भारत के संकल्प के साथ अभियान को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में पूर्व अध्यक्ष डॉ सुरेंद्र सिंह नरवरिया, डॉ राममोहन गुप्ता, डॉ हरीश कुमार,अध्यक्ष डॉ रविन्द्र कुन्तल,महासचिव डॉ चिराग गुप्ता,कोषाध्यक्ष डॉ कुलदीप गोयल,मीडिया प्रभारी डॉ हिमांशु चौधरी,डॉ अंकुर सिंह,डॉ गौरव दीक्षित,पी.आर.ओ.डॉ रोहित चौधरी , डॉ अमित सोनी आदि चिकित्सक उपस्थित रहे।

प्रभारी मंत्री आज व कल दौरे पर

करौला (निंसं.) गृह, गोपालन, पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य विभाग के राज्यमंत्री एवं जिला प्रभारी मंत्री जवाहर सिंह बेढम 20 जून शुक्रवार को दोपहर 2:00 बजे जिले की नादौती तहसील के बीलई में शहीद आराम सिंह जी की मूर्ति का अनावरण करेंगे इसके पश्चात सांय 7:00 बजें से श्रीमहावीर जी तहसील के अकबरपुर में आयोजित रात्रि चैपाल कार्यक्रम में भाग लेंगे।

मजदूर की मौत

करौली । करौली के लांगरा थाना क्षेत्र के आरामपुरा गांव में मार्बल पट्टियों से दबकर एक मजदूर की मौत हो गई। घटना उस समय हुई जब भवन निर्माण के लिए मंगवाई गई मार्बल की पट्टियां ट्रक से उतारी जा रही थीं। आरामपुरा गांव निवासी प्रभु जाटव ने नागौर से मार्बल मंगवाया था। गूलर घटा क्षेत्र के कन्हैया माली अपने पुत्र राधे और अशोक सहित 8-10 मजदूरों के साथ मार्बल उतार रहे थे। इसी दौरान ट्रक में रखी मार्बल की पट्टियां अचानक खिसककर कन्हैया माली पर गिर गईं। साथी मजदूरों ने तुरंत मार्बल हटाकर कन्हैया को बाहर निकाला। उसे लांगरा हॉस्पिटल ले जाया गया। डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। शव को करौली हॉस्पिटल की मॉर्चरी में रखा गया ।

तैयारियों का जायजा लिया

करौला (निंसं.) जिला कलेक्टर नीलाभ सक्सेना ने गुरूवार को श्रीमहावीरजी में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर जिला स्तरीय कार्यक्रम श्री दिंगबंर जैन अतिशय क्षेत्र मंदिर परिसर में आयोजित योगा दिवस के संबंध में व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने 21 जून को अधिक से अधिक अधिकारी, कर्मचारी एवं आमजन की योग दिवस पर भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए भी कहा। उन्होंने बताया कि श्री महावीरजी में प्रात: 6.30 से 8 बजे तक योग दिवस आयोजित किया जायेगा। उन्होंने बताया कि इसके अलावा जिले में धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों पर करौली में श्री मदनमाहेन जी मंदिर परिसर, अंजनी माता मंदिर, शाहीकुण्ड, रणगंवा ताल, पांचना बांध, कैलादेवी मंदिर परिसर, सपोटरा में मॉ गुमानो देवी मंदिर प्रांगण, टोडाभीम में श्री मेंहदीपुर बालाजी मंदिर प्रांगण एवं नादौती में गढमोरा देवनारायण मंदिर परिसर सहित ।

'मेहंदीपुर बालाजी के लिए बनाया जायेगा अलग जीएसएस'

■ 9 घंटे के बाद विधायक के आश्वासन पर हुआ धरना समाप्त

■ अघोषित बिजली कटौती के विरोध में व्यापारियों ने किये बाज़ार बंद

मेंहदीपुर बालाजी। धार्मिक नगरी मेहंदीपुर बालाजी में अघोषित बिजली कटौती को लेकर व्यापारियों द्वारा किया जा रहा धरना प्रदर्शन नौ घंटे बाद विधायक विक्रम बंशीवाल के

आश्वासन के पर समाप्त हुआ। दरअसल बीते कई दिनों से अघोषित बिजली कटौती की बड़ी समस्या से जुझ रहे

मेहंदीपुर बालाजी के व्यापारियों ने बाजार बंद का ऐलान किया जहॉ बुधवार सुबह से ही व्यापारियों ने अपने प्रतिष्ठान नहीं खोले जिसके चलते मुख्य बाजार, उदयपुरा रोड पर सन्नाटा पसरा वही बिजली समस्या को लेकर व्यापार मंडल के नेतृत्व में सभी दुकानदार एकजुट होकर

मुख्य बाजार में धरना प्रदर्शन करते हुए प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की ।वही श्रद्धालुओं की भीड़ के चलते मंदिर में तो आवाजाही बनी हुई है, लेकिन बाजार में दुकानें बंद होने से खरीदारी नहीं कर पा रहे। इससे उन्हें परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।धरना स्थल पर पहुंचे समस्या समाधान के लिये पहुके दौसा व करौली डिस्कॉम के अधिकारियों को भामाशाह भागीरथ सिंह ने जमकर खरी खोटी सुनाई और विघुतकर्मियो पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाये ।वहीं दौसा बिजली विभाग के एसई एमएल मीना ने व्यापारियों को आश्वस्त करते हुए कहा कि एक माह के अंदर बिजली समस्या का समाधान हो जायेगा वहीं ठााम पंचायत की ओर एक बीघा ज़मीन अलोटमेट के बाद 15 दिवस में जीएसएस की सेंक्शन करवाने का वादा किया। इसके बाद सिकराय विधायक विक्रम बंसीवाल ने सभी दुकानदारों को मेंहदीपुर बालाजी के लिये अलग जीएसएस बनाने की घोषणा के साथ बिजली विभाग के अधिकारियों को सख़्त हिदायत देते हुए कहा कि व्यापारियो की किसी प्रकार की समस्या का समाधान नहीं हुआ तो कार्रवाई की जायेगी । लोगो द्वारा स्थानीय कर्मचारियों पर लगाए गए भ्रष्टाचार के आरोप पर दौसा अधीक्षण अभियंता ने कहा कि व्यापारी भ्रष्टाचार करने वाले कर्मचारियों का नाम बताए।

पांच जने गिरफ्तार

हिंडौन सिटी । थाना सदर हिंडौन पुलिस ने रात्रि गस्त के दौरान अनावश्यक और संदिग्ध परिस्थितियों में घूमते हुए 5 लोगों को गिरफ्तार किया है। यह कार्रवाई पुलिस महानिरीक्षक भरतपुर रेंज भरतपुर राहुल प्रकाश आईपीएस और जिला पुलिस अधीक्षक करौली बृजेश कुमार ज्योति उपाध्याय आईपीएस के निर्देशन में की गई है। पुलिस के अनुसार, गिरफ्तार किए गए लोगों में सुनील पुत्र जगदीश उम्र 24 साल जाति मीना निवासी आगरी थाना सदर करौली, शिवकेश पुत्र हरकेश उम्र 24 साल जाति मीना निवासी आगरी थाना सदर करौली, रविशंकर पुत्र मदन उम्र 26 साल जाति मीना निवासी आगरी थाना सदर करौली, रामसिंह पुत्र रमेश चंद उम्र 26 साल जाति मीना निवासी बझेडा थाना सदर हिण्डोन और मुनीराज पुत्र छोटेलाल उम्र 35 साल जाति मीना निवासी रीठोली जिला करौली शामिल हैं।

राहत के साथ फिर उभरी मुश्किलें

हिण्डौन सिटी। गुरुवार शाम को हिण्डौन सिटी में प्री-मानसून की दूसरी बारिश ने एक बार फिर शहरवासियों को राहत और मुश्किलों के बीच झूलने को मजबूर कर दिया। शाम 5 बजे से करीब डेढ़ घंटे तक हुई झमाझम बारिश में 50 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जिसने उमस भरी गर्मी से तो राहत दी, लेकिन शहर की लचर जल निकासी व्यवस्था और नगर परिषद की नाकामी को फिर बेपर्दा कर दिया। मंगलवार को हुई पहली बारिश के बाद बुधवार की बारिश ने प्रमुख बाजारों और कॉलोनियों को लबालब कर दिया, जिससे जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया और पिछले साल की बाढ़ की भयावह यादें ताजा हो गई।

उल्लेखनीय है कि गुरुवार शाम को लगभग डेढ़ घंटे तक हुई झमाझम बारिश ने कटरा बाजार, भायलापुरा, कम्बलबाल मार्केट, बयाना मार्ग, मनीराम पार्क, अस्पताल रोड और निकली कॉलोनी जैसे इलाकों को जलमग्न कर दिया। सड़कों पर तेज बहाव और दुकानों में पानी घुसने से व्यापारियों को भारी नुकसान हुआ। निचली कॉलोनियों में पानी भरने से लोगों को घरों से निकलना मुश्किल हो गया। वाहन चालक और राहगीर घुटनों तक पानी में चलने को मजबूर रहे।

पिछले साल बारिश के दौरान बाढ़ जैसे हालात ने शहर को थाम लिया था। बाजारों में पानी भरने से व्यापारियों को करोड़ों का नुकसान हुआ, दो लोगों की जान गई, और कई जानवर पानी में बह गए। उस दौरान दो महीने तक बाजार बंद रहे, और 20 दिनों तक लोग घरों में कैद रहे। प्रशासन और एनडीआरएफ की टीमें नावों से राहत सामठी पहुंचाने को मजबूर थीं। संभागीय आयुक्त, जिला प्रशासन के आला अधिकारी और आपदा प्रबंधन मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने प्रभावित इलाकों का दौरा कर स्थायी समाधान का वादा किया था। लेकिन मंगलवार और बुधवार की बारिश ने साबित कर दिया कि ये वादे कागजी ही रह गए। नालों में रुकावट और सफाई के अभाव ने इस बार भी जलभराव की स्थिति पैदा कर दी। लोगों का कहना है कि प्रशासन ने पिछले साल भरोसा दिया था कि नालों की सफाई और जल निकासी की व्यवस्था होगी, लेकिन कुछ नहीं हुआ। अगर अभी कदम नहीं उठाए गए, तो इस मानसून में फिर बाढ़ जैसे हालात बन सकते हैं।" शहरवासियों का कहना है कि अगर मानसून की भारी बारिश हुई, तो स्थिति और भयावह हो सकती है । शहरवासियों ने नगर परिषद और जिला प्रशासन से तत्काल नालों की सफाई और जल निकासी की पुख्ता व्यवस्था की मांग की है। व्यापारियों ने कहा है कि पिछले साल की बाढ़ ने हमें बर्बाद कर दिया था। इस बार भी वही हालात बन रहे हैं। प्रशासन की लापरवाही हमें भारी पड़ रही है।" लोगों ने चेतावनी दी है कि अगर जल्द कार्रवाई नहीं हुई, तो वे आंदोलन करने को मजबूर होंगे। नगर परिषद और जिला प्रशासन की ओर से अभी तक कोई ठोस बयान या कार्रवाई नहीं दिखी है। मंगलवार की बारिश के बाद भी सफाई व्यवस्था में सुधार नहीं हुआ, और बुधवार की बारिश ने हालात को और बदतर कर दिया। शहरवासी अब मानसून की आगामी बारिश से पहले प्रशासन के जागने की उम्मीद कर रहे हैं।

3 चिकित्सा संस्थानों का औचक निरीक्षण

करौली । चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की आमजन तक समयानुरूप पहुंच की जानकारी हेतु सीएमएचओ डॉ. जयंतीलाल मीना ने सीएचसी सूरौठ, पीएचसी विजयपुरा और जिला अस्पताल हिंडौन का निरीक्षण कर संस्था पर साफ सफाई सहित कार्मिकों को ड्यूटी समय पर निर्धारित आईडी कार्ड और यूनिफॉर्म में रहने के निर्देश प्रदान किए। सीएमएचओ के द्वारा सीएचसी सूरौठ में एमओटी में टेबल सहित कमरे की सफाई, सैंपल कलेक्शन बढ़ाने, पीएमएसएमए की जांच का रजिस्टर अलग से बनाने, पीएनसी वार्ड में बेडशीट नियमित बदलवाने, लेबर रूम में सात ट्रे रखवाने, लेबर रूम को इनवर्टर से जुड़वाने जाते है।

पश्चिम मध्य रेल

खुली निविदा सूचना

सं. ईएल/50/एनआईटी/48(2025-26) दिनांक 16.06.2025

भारत संघ के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से वरि. मंडल विद्युत अभियंता (सामान्य), पश्चिम मध्य रेलवे, कोटा निम्नलिखित कार्यो के लिए ई- निविदा आमंत्रित करते है, **निविदा संख्या:** ईएल/50/263/(2025 – 26), **कार्य का नाम** : कोटा मंडल के स्टेशनों पर प्रस्तावित वीडियो निगरानी प्रणाली (वीएसएस) के लिए विदयुत आपूर्ति व्यवस्था और एयर कंडीशनर का प्रावधान (आईआरपीएसएम में कार्य का नाम- 05 रेलवे स्टेशन अर्थात भवानीमंडी, रामगंजमंडी, बूंदी.गंगापुर सिटी और हिडौन में एकीकृत आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रणाली (वीडियो निगरानी प्रणाली) का प्रावधान) **अनुमानित लागत रु. में** : 42,49,825.05, **बयाना राशि (रु. में)** : 85,000/-, **कार्य समाप्ति अवधि** : 6 माह, **निविदा प्रस्तुत करने एवं खुलने की दिनांक तथा समय:** 11-07-2025 को 15.00 बजे तक एवं खुलने का समय 15.15 बजे, ऑफर केवल ई-टेण्डरिंग के माध्यम से वेवसाईट **http://www.ireps.gov.in** पर स्वीकार किए जायेंगे। निविदा दाता के पास क्लास III डिजिटल सिग्नेचर सार्टिफिकेट होना चाहिए एवं आई.आर.ई.पी.एस. पोर्टल पर रजिस्टर्ड होना चाहिए। कोई भी निविदा मैनुएली स्वीकार नही है निविदा डालने से पहले टेण्डर दस्तावेजों की स्पेशल कण्डीशन्स एवं शर्तें अवश्य पढ लें।

(हस्ता)

कृते वरि. मंडल विद्युत अभियंता (सामान्य)
पश्चिम मध्य रेलवे, कोटा

स्वच्छ भारत अभियान एक कदम स्वच्छता की ओर

In The Court Of IV Civil Judge Class-II, District Court, Ujjain
Presiding Officer : सुश्री सृष्टि पटेल
(आदेश 5 नियम 20 व्यवहार प्रक्रिया संहिता 1908 के अंतर्गत प्रकाशन हेतु)
(MJC/4000007/2015)
माधव क्लब .... वादी
VS
मुकेश मीणा मृत वारिसान होशियार सिंह...प्रतिवादी
Process Id- /2025
पेशी दिनांक 27/06/2025

प्रेषिती-
(1) मुकेश मीणा द्वारा बारिसान होशियार सिंह बारिसान लक्ष्मीबाई पति स्व.मुकेश मीणा पता-ग्राम केमला तह करोली जिला संवाई माधवपुर राजस्थान

यह कि प्रार्थी माधव क्लब द्वारा सचिव की ओर से इस न्यायालय के समक्ष एक आवेदन पत्र अंतर्गत आदेश 9 नियम 9 सहपठित धारा 151 सीपीसी के अधीन प्रकरण को पुन: रिकार्ड पर लेने के आदेश प्रदान किये जाने के संबंध में आपके विरूद्ध सिविल एमजेसी के लिए वाद संस्थित किया है, आपके विरूद्ध सिविल एमजेसी के लिए वाद संस्थित किया है, आपकों इस न्यायालय में सूचना के प्रकाशन के 30 दिवस के भीतर वाद का उत्तर देने के लिये उपसंजात/हाजिर होने के लये सम्मन किया जाता है, आप न्यायालय में स्वयं या किसी ऐसे प्लीडर (अधिवक्ता) द्वारा उपसंजात हो सकते है, जिसे सम्यक अनुदेश दिये गये हो और जो इस वाद में संबंधित सभी सारवान कथनों का उत्तर दे सके। आपको यह निर्देश भी दिया जाता है कि उस दिन अपनी प्रतिरक्षा का लिखित कथन प्रस्तुत करें और उस दिन ऐसे सब दस्तावेज जो आपके कब्जे या शक्तिमें है पेश करें जिन पर आपका प्रतिरक्षा या मुजराई का दावा या प्रतिदावा आधारित हो, और यदि आप अन्य किसी दस्तावेज पर चाहे वह आपके कब्जे या शक्तिमें हो अपनी प्रतिरक्षा या मुजरा के दावे या प्रतिदावे के समर्थन में साक्ष्य के रूप में निर्भर करते है तो ऐसी सभी दस्तावेज की लिखित कथन के साथ उपलब्ध की जाने वाली सूची में प्रविष्टि करें।
आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप उपर बताई गई अवधि में इस न्यायालय में उपस्थित नहीं होंगे तो वाद की एक पक्षीय सुनवाई कर उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जायेगा। साथ ही यह भी सूचित किया जाता है कि यदि आप निराकरण मध्यस्थ के माध्यम से करने के इच्छुक हैं तो पीठासीन अधिकारी को अवगत करावें।
यह आज तारीख 10 June 2025 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगा कर दिया गया है।
मोहर (सृष्टि पटेल) चतुर्थ व्यवहार न्यायाधीश कनिष्ठ खण्ड, उज्जैन (म.प्र.)

महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय
कार्यालय चक सकीतरा, कुम्हेर भरतपुर-321201
Emall-Info@msbrijuniversity.ac.in,
Website-www.msbrijuniversity.ac.in

क्रमांक-मसूबृवि/स्था/2025/710 दिनांक-19/06/25

ई-निविदा सूचना

महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर के लिए अकुशल, अर्द्धकुशल, कुशल एवं उच्च कुशल कार्मिकों की आपूर्ति हेतु पंजीकृत फर्मों / सर्विस प्रोवाईडरों से ई-टेण्डरिंग के माध्यम से दर संविदा हेतु ई-निविदाएं आमन्त्रित की जाती है। निविदा की विस्तृत जानकारी व ई-निविदा प्रपत्र विश्वविद्यालय वेवसाईट sppp.rajasthan.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in से डाउनलोड की जा सकती है।
NIB code BUB2526A0006
UBN is BUB2526SLOB00025

कुलसचिव

कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय (प्रा.शि.), करौली

क्रमांक:-जिशिअ/मु.प्रा.शि./करौली/लेखा/2025-26/119
दिनांक:-19.06.2025

खुली निविदा सूचना संख्या 04/2025-26

वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए 01 (एक) वाहन DZIRE/CRETA/BREEZA अन्य SUV श्रेणी किराये पर लेने हेतु (अनुमानित लागत 3.00 लाख) मुहरबंद खुली निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा दिनांक 20.06.2025 से 27.06.2025 समय प्रात: 11:00 बजें तक प्राप्त कर उसी दिन समय 01:00 बजे तक कार्यालय में जमा करायी जा सकती है तथा निविदा उसी दिन अपराह्न 02:00 बजे खोली जायेगी। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण स्थानीय कार्यालय एवं बेबसाईट http://sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकती है।
UBN No: EED2526SSOB00156

जिला शिक्षा अधिकारी मु. प्रा.शि. करौली

कार्यालय जिला परिषद करौली

क्रमांक/निविदा/मतस्य/2025-26/127 दिनांक:-17.06.2025

मत्स्य ठेका निविदा विज्ञप्ति

जिला परिषद के अधीन 'ख' श्रेणी बंध अतेवा (आरक्षित राशि 3.60 लाख) एवं बन्ध महस्वा (आरक्षित राशि 1.00 लाख) में मत्स्य ठेके हेतु वर्ष 2025-26 से ठेका संबंधित 31.03.2026 तक के लिए मोहरबंद निविदाऐं आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र एवं शर्तें निविदा शुल्क 400 रू. (अक्षरे चार सौ मात्र) नकद भुगतान कर कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते है। निविदाऐं दिनांक 23.06.2025 को प्रात: 11.00 बजे तक बेची जावेगी उसी दिन 2.00 बजे तक कार्यालय में जमा की जावेगी तथा दोपहर 2.30 बजे उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोली जावेगी। उचित मूल्य निविदत करने पर नियमानुसार जलाशय के स्टेजेज बढोतरी के आधार पर 05 वर्ष की अवधि के लिए लीज पर देने का प्रावधान है।

आरक्षित राशि की 10 प्रतिशत अमानत राशि निविदा के साथ डी.डी. द्वारा जमा कराना आवश्यक होगा। किसी भी निविदा के साथ अमानत राशि जमा नहीं कराने अथवा कम राशि जमा कराने पर उस निविदा पर कोई विचार नहीं किया जावेगा। प्राधिकृत समिति को किसी भी प्राप्त निविदा को बिना कोई कारण बताए अस्वीकृत करने का अधिकार होगा।

(शिव चरण मीना)
मुख्य कार्यकारी अधिकारी

NIB: ZKR2526A0192
BID:ZKR2526GS0B00275

भारतीय क्रिकेट में बदलाव के कठिन दौर में टीम की कमान संभालने जा रहे शुभमन गिल को उचित समय और सहयोग दिया जाना चाहिए। नए कप्तान को सलाह दी कि ड्रेसिंग रूम से बाहर की टिप्पणियों पर सोचे बिना वह अपनी रणनीति पर फोकस रखें। - **सचिन तेंदुलकर**

पूर्व भारतीय बल्लेबाज, गिल को सलाह देते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

एंजेलो मैथ्यूज

टेस्ट क्रिकेट के लिए साल 2025 काफी उतार-चढ़ाव से भरा रहा। इस साल कई इंटरनेशनल क्रिकेट के दिग्गजों ने टेस्ट को अलविदा कह दिया। एंजेलो मैथ्यूज आज अपने ही देश की धरती पर आखिरी टेस्ट मैच खेल रहे हैं। श्रीलंका की टीम का बांग्लादेश के साथ कोलंबो में टेस्ट मैच चल रहा है।

श्रीलंका के दिग्गज बल्लेबाज एंजेलो मैथ्यूज जब बांग्लादेश बनाम श्रीलंका मैच के तीसरे दिन बल्लेबाजी करने मैदान पर उतरे तो उस दौरान बांग्लादेश के खिलाड़ियों ने मैथ्यूज को गार्ड ऑफ ऑनर के साथ मैदान पर उनका स्वागत किया। बांग्लादेश के प्लेयर्स दो लाइन बनाकर खड़े हुए।

क्या आप जानते हैं ?... भारत और इंग्लैंड के बीच टेस्ट अगस्त 2021 में हुआ था, अब इंग्लैंड ने एक पारी और 76 रनों से बड़ी जीत दर्ज की थी।

प्रीमियर लीग का फूल शेड्यूल जारी

नई दिल्ली, 19 जून। आगामी 2025-26 सीजन के लिए प्रीमियर लीग कार्यक्रमों की घोषणा कर दी गई। आगामी 15 अगस्त से इन कार्यक्रमों का आगाज होगा। जहां डिफेंडिंग चैंपियन लिवरपूल अपने पहले मैच में एनफील्ड में बोर्नमाउथ से भिड़ेगा।वहीं इस बीच, मैनचेस्टर यूनाइटेड को ओल्ड ट्रैफर्ड में आर्सेनल के खिलाफ खेलना होगा। यूनाइटेड के मैनचेस्टर चचेरे भाई, सिटी, मोलिनक्स स्टेडियम में वॉल्व्स के साथ भिड़ेंगे। सुंदरलैंड आठ साल बाद प्रीमियर लीग में वापस आ गया है। शेफील्ड यूनाइटेड के खिलाफ प्ले-ऑफ जीतने के बाद, अब वह स्टेडियम ऑफ लाइट में शीर्ष स्तर की कार्रवाई का आनंद लेना चाहेगा। वहीं बोर्नमाउथ के खिलाफ़ शुरूआत के बाद, लिवरपूल के खिताब की रक्षा का परीक्षण शुरू में ही हो जाएगा, दूसरे सप्ताह में न्यूकैसल की एक चुनौतीपूर्ण यात्रा के बाद आर्सेनल के खिलाफ़ एक ब्लॉकबस्टर घरेलू मुकाबला होगा। आर्सेनल के लिए, शुरुआत और भी ज़्यादा कठिन है - उन्हें अपने पहले छह मैचों में मैनचेस्टर यूनाइटेड, लिवरपूल, मैनचेस्टर सिटी और न्यूकैसल का सामना करना पड़ेगा। गनर्स, जो लगातार तीसरे सीज़न में उपविजेता रहे, को पहले दिन से ही अपने सबसे तेज़ प्रदर्शन की ज़रूरत होगी। पेप गार्डियोला के नेतृत्व में अपने सातवें लीग खिताब की तलाश में मैनचेस्टर सिटी 16 अगस्त को वॉल्व्स के खिलाफ़ अपने पहले मैच की शुरुआत करेगी।

टेनिस खिलाड़ियों को अब देश के लिए खेलने से इंकार करना पड़ेगा भारी, साई वसूल करेगा रकम

नई दिल्ली, 19 जून। भारतीय खेल प्राधिकरण के नए आदेश के अनुसार कई योजनाओं के जरिए वित्तीय मदद हासिल करने वाले देश के टेनिस खिलाड़ियों को राष्ट्रीय टीम में खेलने की प्राथमिकत देनी चाहिए। अगर वे बिना किसी वैध स्पष्टीकरण के खेलने से इनकार करते हैं तो उनसे धनराशि वसूल की जाएगी। खिलाड़ियों को प्राप्त धनराशि के लिए जवाबदेह बनाते हुए साई ने अपने आदेश में टारगेट एशियन गेम्स ग्रुप के अतंर्गत मदद के लिए चुने गए खिलाड़ियों को लिखित में देने को कहा है जिसमें वे स्वीकार करें कि वित्तीय मदद हासिल करना देश के खेल उत्कृष्टता में योगदान देने की जिम्मेदारी है।साई ने अपने आदेश में टॉप्स, एनएसएफ और टीएजीजी योजनाओं के अंतर्गत मदद हासिल करने वाले खिलाड़ियों से बिली जीन किंग कप, डेविस कप, एशियाई खेल और ओलंपिक जैसे प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए उनकी उपलब्धता और इच्छा की पुष्टि करने को कहा है। साई के आदेश के अनुसार, ये टेनिस प्रतियोगिताएं राष्ट्रीय गौरव के लिए अहमियत रखती हैं।

भारत और इंग्लैंड ट्रॉफी के साथ दिखे सचिन और एंडरसन

सीरीज का नाम पटौदी ट्रॉफी नहीं बल्कि तेंदुलकर-एंडरसन ट्रॉफी रखा गया

नई दिल्ली, 19 जून। भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज का अनावरण हो गया है। भारत के दिग्गज सचिन तेंदुलकर और इंग्लैंड के दिग्गज जेम्स एंडरसन ने इस ट्रॉफी का अनावरण किया। साथ ही बता दें कि, अब इस सीरीज का नाम पटौदी ट्रॉफी नहीं बल्कि तेंदुलकर-एंडरसन ट्रॉफी रखा गया है। वहीं पटौदी ट्रॉफी का नाम बीसीसीआई ने नहीं ईसीबी ने बदला है।भारत और इंग्लैंड के बीच खेली जाने वाली ये टेस्ट सीरीज को अब से हम एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी कहा

जाएगा। इसके अलावा इस बात की भी आधिकारिक पुष्टि हो गई है कि पटौदी परिवार की शान में इस ट्रॉफी को जीतने वाले कप्तान को पटौदी पदक दिया जाएगा। एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी, इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड औरबीसीसीआई के बीच एक संयुक्त पहल है जो अब इंग्लैंड और भारत के बीच होने वाले सभी भविष्य की टेस्ट सीरीज का प्रतिनिधित्व करेगी। इससे पहले इंग्लैंड में टेस्ट सीरीज पटौदी ट्रॉफी और भारत में टेस्ट सीरीज एंथनी डी मेलो ट्रॉफी के नाम से जानी जाती थी। हालांकि, अब दोनों ही देशों में सीरीज एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी होगी।

ऑल इंडिया लॉन टेनिस चैम्पियनशिप में तपस्वी ने जीता स्वर्ण पदक

सोनीपत, 19 जून। हरियाणा के सोनीपत के कुंडली में आयोजित ऑल इंडिया लॉन टेनिस चैंपियनशिप सीरीज अंडर-14 में लिटल एंजल्स लॉन टेनिस एकेडमी के खिलाड़ी तपस्वी ने प्रतियोगिता के फाइनल मैच में दिल्ली के खिलाड़ी वेदांत को 6-4, 7-5 के स्कोर से हराकर स्वर्ण पदक जीता। तपस्वी ने इस जीत के साथ ना केवल अपनी एकेडमी बल्कि राज्य का नाम भी रौशन किया। प्रतियोगिता में लगभग 85 खिलाड़ियों ने भाग लिया। तपस्वी जूनियर स्तर पर अपने खेल का बेहतर प्रदर्शन करते हुए अब पुणे में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में भाग लेगा। विद्यालय के चेयरमैन तरसेम गर्ग, सचिव डॉ. विशाल गर्ग व विद्यालय की प्रधानाचार्या आशा गोयल ने तपस्वी को बधाई दी और उसको भविष्य में होने वाली पुणे में आयोजित राष्ट्रीय स्तर प्रतियोगिता में भी बेहतर खेल प्रदर्शन के लिए प्रेरित भी किया।

भारतीय टीम में वापसी कर रहे करुण नायर अभ्यास के दौरान चोटिल

लंदन, 19 जून। भारत और इंग्लैंड पहला टेस्ट लीड्स में 20 जून से खेला जाना है। लेकिन इस मैच के शुरू होने से पहले भारतीय कैंप से बुरी खबर सामने आ रही है। लंबे समय बाद भारतीय टीम में वापसी कर रहे करुण नायर प्रैक्टिस के दौरान चोटिल हो गए हैं। प्रैक्टिस के दौरान प्रसिद्ध कृष्णा की गेंद उनके पेट पर जाकर लगी। नायर ने कुछ देर तो बल्लेबाजी जारी रखी लेकिन वह सहज नहीं दिखे। कुछ देर बाद उन्होंने प्रैक्टिस बंद कर दी और उन्हें फिजियो के साथ देखा गया। करुण नायर की ये चोट कितनी गंभीर है अभी इसकी कोई जानकारी नहीं है।करुण नायर ने भारत के लिए आखिरी टेस्ट मैच 2017 में खेला था। 8 साल बाद उन्होंने अब भारतीय टीम में वापसी की है और उनके पहले टेस्ट की प्लेइंग 11 में शामिल होने की संभावनाएं काफी ज्यादा है। हालांकि, मैच से पहले उनकी ये चोट उनका इंतजार बढ़ा भी सकती है। ऋषभ पंत ने कंफर्म किया कि नवनियुक्त कप्तान शुभमन गिल विराट कोहली की विरासत को संभालेंगे और इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज में नंबर-4 पर बैटिंग करेंगे। वहीं पंत ने ये भी बताया कि वह खुद नंबर-5 पर बैटिंग करने वाले हैं। ऐसे में नंबर-3 और 6 का पायदान ही करुण नायर के लिए खाली है। नायर ने 2016 में डेब्यू करने के बाद से 6 टेस्ट मैच खेले हैं।

शास्त्री ने गिल को चेताया

नई दिल्ली, 19 जून। शुभमन गिल के लिए बतौर कप्तान इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज बिल्कुल भी आसान नहीं होने वाली है। ऐसा ही कुछ पूर्व क्रिकेटर और पूर्व हेड कोच रवि शास्त्री का मानना है। भारतीय क्रिकेट टीम इंग्लैंड में 5 मैचों की टेस्ट सीरीज खेलेगी। जिसका पहला मैच शुक्रवार, 20 जून से शुरू होगा। पिछले 18 सालों से टीम इंडिया इंग्लैंड में टेस्ट सीरीज नहीं जीती है। अब इस दौरे के लिए रवि शास्त्री ने गिल एंड टीम को चेताया है और सलाह भी दी है। रिव्यू में रवि शास्त्री ने शुभमन गिल को लेकर कहा कि इस युवा कप्तान को सबसे चुनौतीपूर्ण भूमिकाओं में से एक को निभाने के लिए धैर्य और संयम की जरूरत है। शास्त्री ने गिल को अहम सलाह देते हुए कहा कि, मुझे लगता है कि उन्हें अपना समय लेना चाहिए। ये आसान बिल्कुल नहीं होने वाला है। उन्हें इंग्लैंड में टीम इंडिया की कमान संभालने का एक मुश्किल काम करने को कहा गया है।

इंग्लैंड में शुभमन गिल ने इससे पहले कुल 3 टेस्ट खेले हैं। 6 पारियों में उनके नाम सिर्फ 88 रन हैं। उन्होंने कुल 32 टेस्ट मैचों की 59 पारियों में 1893 रन बनाए हैं उनका एवरेज 35.06 का है।

इंग्लैंड की पिचें हमेशा अनुभवी प्लेयर्स की भी परीक्षा लेती है देखना होगा कि बतौर कप्तान शुभमन गिल का करियर कैसे शुरू होता है वो भी तब जब विराट कोहली, रोहित शर्मा जैसे दिग्गज टीम में नहीं हैं। भारत ने 2007 के बाद इंग्लैंड में टेस्ट सीरीज नहीं जीती है।

शास्त्री का मानना है कि ये दौरा युवा खिलाड़ी के करियर में अहम रोल अदा कर सकता है। उन्होंने कहा कि, ये कभी आसान नहीं होता लेकिन मुझे लगता है कि वो यहां खेलकर अनुभव हासिल करेंगे और सीखेंगे। आईपीएल में गुजरात टाइटंस के कप्तान के रूप में मैंने देखा कि वो शांत थे, संयमित थे। उनका स्वाभाव अच्छा है। शास्त्री ने आगे कहा कि, वह एक व्यक्ति के रूप में परिपक्व हो गए हैं, उनके साथ कुछ युवा खिलाड़ी हैं, और मुझे लगता है कि जहां तक शुभमन गिल की बात है तो ये सीखने का एक मौका है।

भारत और इंग्लैंड के बीच पहले टेस्ट में बारिश बनेगी विलेन!

लंदन, 19 जून। भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज का पहला मुकाबला कल यानी 20 जून से लीड्स के हेडिंग्ले मैदान में खेला जाने वाला है। विराटकोहली और रोहित शर्मा जैसे दिग्गजों के टेस्ट क्रिकेट से संन्यास के बाद पहली बार भारतीय टीम युवा टैलेंट के साथ मैदान में उतर रही है।

क्रिकेट फैंस के लिए अच्छी खबर ये है कि मैच के दौरान बारिश की कोई संभावना नहीं है। मौसम विभाग के अनुसार, लीड्स में अधिकतम तापमान 28 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 15 डिग्री सेल्सियस रहने की उम्मीद है। ऐसे में फैंस को बिना बारिश की चिंता किए पूरे पांच दिन क्रिकेट का लुत्फ उठाने का मौका मिलेगा।

हेडिंग्ले की पिच हमेशा से ही गेंदबाजों को मदद देने वाली रही है, खासकर तेज गेंदबाजों को ये पिच ज्यादा फेवर करती है। पहले दिन ही पहली पारी में नई गेंद से बल्लेबाजों को काफी सतर्क रहना होगा क्योंकि पहले सेशन में तेज गेंदबाजों को स्विंग और सीम मूवमेंट से काफी मदद मिल सकती है। ऐसे में शुरुआती कुछ ओवर बल्लेबाजों के लिए चुनौतीपूर्व हो सकते हैं तो बल्लेबाजों को थोड़ा रुककर खेलना होगा। मैच में जीत हार कि दिश तय करने के लिए पहली इनिंग में ही बढ़त बनाना फायदेमंद साबित होगा। हेडिंग्ले की इस पिच पर अब तक 84 टेस्ट मैच खेले जा चुके हैं। जिनमें से 29 बार पहले बल्लेबाजी करने वाली टीम को जीत मिली है। जबकि 36 बार दूसरी पारी में खेलने वाली टीम ने जीत दर्ज की है। यही कारण है कि टॉस जीतने के बाद ज्यादातर टीमें पहले गेंदबाजी करने को देखती हैं। इस मैदान पर सबसे बड़ी सफल रन चेज 404/3 की रही है, जो इस पिच के चेजिंग फ्रेंडली नेचर को दर्शाती है।

इस पिच पर मैच जैसे-जैसे आगे बढ़ता है, औसत स्कोर भी वैसे-वैसे गिरता जाता है, इसलिए दूसरी इनिंग में बल्लेबाजी करना थोड़ा आसान हो जाता है। ऐसे में ये देखना दिलचस्प होगा कि इंग्लैंड की टीम टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला करती है या फिर गेंदबाजी का।

इस बार भारतीय टीम एक बिल्कुल युवा कप्तान शुभमन गिल के साथ मैदान में उतर रही है। पांच टेस्ट मैचों की ये सीरीज दोनों टीमों के बीच एक कड़ी टक्कर साबित होने वाली है।

अनाया ने आईसीसी और बीसीसीआई से ट्रांसजेंडर क्रिकेटरों का समर्थन करने की अपील की

नई दिल्ली, 19 जून। भारत के पूर्व क्रिकेटर संजय बांगक की संतान जो कुछ समय पहले ही लड़का से लड़की बनी अनाया बांगर ने आईसीसी और बीसीसीआई से ट्रांसजेंडर क्रिकेटरों का समर्थन करने की अपील की है। उन्होंने एक वीडियो शेयर करते हुए कहा है कि वैज्ञानिक रूप से वह महिला क्रिकेट खेलने के योग्य हैं। बता दें कि, अनाया बांगर का पूर्व नाम आर्यन बांगर था जिन्होंने हार्मोन रिप्लेसमेंट थिरेपी से गुजरकर लड़का से लड़की बन चुकी हैं।

अभी ट्रांसजेंडर क्रिकेटरों को महिला क्रिकेट में हिस्सा लेने की इजाजत नहीं है। अनाया बांगर ने 8 पेज की साइंटिफिक रिपोर्ट को शेयर करते हुए ट्रांसजेंडर महिलाओं को महिला क्रिकेट में खेलने की पुरजोर वकालत की है। एक तरह से उन्होंने ये बहस छेड़ने की कोशिश की है कि क्या ट्रांसजेंडर्स को महिला क्रिकेट खेलने के योग्य माना जा सकता है।

राजधानी

आर.जी.एच.एस. में मरीजों के लिए बनेगा पेशेंट फ्रेंडली सिस्टम

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। राजस्थान गवर्नमेंट हैल्थ स्कीम (आरजीएचएस) अब और अधिक मजबूत और पारदर्शी बनने की दिशा में अग्रसर है। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने गुरुवार को स्वास्थ्य भवन में योजना की गहन समीक्षा की और कई अहम निर्देश दिए। मंत्री ने साफ कहा कि योजना को पेशेंट फ्रेण्डली बनाया जाए और तकनीकी रूप से इतना सशक्त किया जाए कि किसी भी स्तर पर गड़बड़ी की कोई गुंजाइश न बचे। उन्होंने चेताया कि यदि इसके बावजूद भी किसी स्तर पर अनियमितता पाई गई तो सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि लोगों की जीवन रक्षा से जुड़ी योजना में कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। स्वास्थ्य मंत्री खींवसर ने अधिकारियों को योजना के क्रियान्वयन में पारदर्शिता और सुगमता

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने गुरुवार को स्वास्थ्य भवन में योजना की समीक्षा की।

लाने के निर्देश दिए। अस्पतालों और फार्मेसी स्टोर्स के एम्पेनलमेंट, क्लेम प्रक्रिया, और मरीजों के रजिस्ट्रेशन से लेकर टीआईडी जनरेशन और उपचार एप्रूवल तक सभी प्रक्रियाओं को और प्रभावी बनाने की बात कही गई। उन्होंने मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना की बेस्ट प्रैक्टिसेज को आरजीएचएस में लागू करने पर भी जोर दिया। बैठक में योजना के अंतर्गत एक ग्रिवांस रिडरेसल सिस्टम विकसित करने का निर्णय लिया गया। इसके साथ ही योजना पोर्टल पर फीडबैक ऑप्शन भी जोड़ा जाएगा, जिससे लाभार्थी अपनी समस्याएं सीधे दर्ज कर सकेंगे और उनका त्वरित समाधान संभव हो सकेगा।

प्रियंका गोस्वामी ने बताया कि योजना को फुल प्रूफ सिस्टम के तौर पर विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है।

पेपर लीक प्रकरण में आरपीएससी से पूर्व सदस्य कटारा के खिलाफ अभियोजन स्वीकृति पेश

जयपुर। द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती-2022 पेपर लीक मामले में गुरुवार को एसओजी की ओर से ईडी मामलों की विशेष अदालत में आरपीएससी के पूर्व सदस्य बाबूलाल कटारा के खिलाफ अभियोजन स्वीकृति की प्रति पेश की गई है। एसओजी की ओर से विशेष लोक अभियोजक बीएस चौहान की ओर से अदालत में प्रार्थना पत्र पेश कर आरोपी के खिलाफ अभियोजन स्वीकृति जारी करने वाले कार्मिक विभाग के अधिकारी को भी अभियोजन पक्ष का गवाह बनाने की अनुमति मांगी। अदालत मामले में तीस जून को सुनवाई करेगी। गौरतलब है कि 24 दिसंबर, 2022 को उदयपुर के बेकरिया थाना पुलिस ने परीक्षा पूर्व चलती बस से 49 अभ्यर्थियों को पेपर हल करते पकडा था। मामले में जांच एजेंसी ने माना की आरपीएससी के तत्कालीन चेयरमैन ने कटारा को पेपर और उत्तर कुंजी तैयार

- **अदालत में आरोपी के खिलाफ अभियोजन स्वीकृति जारी करने वाले कार्मिक विभाग के अधिकारी को भी अभियोजन पक्ष का गवाह बनाने की अनुमति मांगा**

करने का दायित्व दिया था। वहीं कटारा ने प्रश्न पत्र घर लाकर उसकी रजिस्टर में नकल उतारी थी। वहीं प्रकरण में अन्य आरोपियों ने भी मिलीभगत कर पेपर को अगली कडी तक पहुंचाया था। जांच एजेंसी को जांच के दौरान बाबूलाल कटारा के घर से करीब 51 लाख रुपए की नकदी सहित करीब आधा किलोग्राम सोने के आभूषण भी बरामद मिले थे।

1200 मोजम्बिक विकलांगों को जयपुर फुट लगाया जायेगा

जयपुर। दक्षिण पूर्वी अफ्रीकी देश मोजाम्बिक की राजधानी मोपूता में विश्व प्रसिद्ध जयपुर फुट की 50 दिवसीय विशेष शिविर लगाकर 1200 मोजम्बिक विकलांगों को लाभान्वित किया जाएगा। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय और जयपुर फुट की निर्माता संस्था भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बी.एम. वी.एस.एस.) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस शिविर का विधिवत उद्घाटन 24 जून को विदेश राज्य मंत्री कीर्तिवद्धन सिंह करेंगे।

इस अवसर पर मोजाम्बिक में भारत के उच्चायुक्त राबर्ट शेटकिनटांग और बी.एम.वी.एस.एस. के अध्यक्ष सतीश मेहता भी उपस्थित रहेंगे।

जेडीए ट्रिब्यूनल ने रेफरेंस याचिका खारिज की

जयपुर । जेडीए अपीलीय अधिकरण ने जेडीए की तीन आवासीय योजनाओं गंगा विहार, यमुना विहार व सरस्वती विहार में वकीलों को 5 प्रतिशत आरक्षण का लाभ देने का आग्रह करने वाली रेफरेंस याचिका को खारिज कर दिया। अधिकरण ने कहा कि यह रेफरेंस याचिका पूरे अधिवक्ता समुदाय के लाभ व हित के लिए दायर हुई है और इसमें वकीलों के लिए आवास नीति को लागू करने का आग्रह किया है। ऐसे में यह याचिका जनहित याचिका की श्रेणी में है। इसलिए रेफरेंस याचिका को जनहित याचिका के तौर पर नहीं सुना जा सकता और ना ही अधिकरण को इसकी सुनवाई का ही क्षेत्राधिकार है। पीठासीन अधिकारी राजेश जैन ने यह आदेश गुरुवार को चन्द्रहास सिंह की रेफरेंस याचिका खारिज करते हुए दिया।

- **जेडीए की तीन आवासीय योजनाओं में वकीलों को आरक्षण से इनकार**

प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता साकेत पारीक ने कहा कि राज्य सरकार की आवास नीति-2013 के तहत वकीलों को भी आरक्षण का लाभ देने के लिए कहा था। लेकिन जेडीए ने 2013 के बाद की किसी भी आवासीय योजना में वकीलों के लिए 5 फीसदी भूखंड आरक्षित नहीं रखे हैं। इसलिए राज्य सरकार से 2013 की नीति की क्रियांविति करवाई जाए और इन तीनों आवासीय योजनाओं में भी वकीलों के लिए भूखंड आरक्षित किए जाएं।

'बजट घोषणा में स्वीकृत हैंडपंप व नलकूप निर्माण के कार्य जल्द पूरा करें'

जयपुर । जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव भास्कर ए. सावंत ने कहा कि बजट घोषणा 2024-25 और 2025-26 के तहत स्वीकृत हैंडपंप और नलकूप निर्माण से संबंधित कार्यों को अतिशीघ्र पूर्ण किया जाए। उन्होंने अभियंताओं को निर्देश दिए कि बजट में घोषित सभी परियोजनाओं को भी निर्धारित समय सीमा के भीतर गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूरा किया जाए।

अतिरिक्त मुख्य सचिव गुरुवार को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से सभी अतिरिक्त मुख्य अभियंता सहित अधीक्षण अभियंताओं के साथ बजट घोषणा, अमृत 2.0, अवैध जल कनेक्शन सहित अन्य बिंदुओं की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने बजट घोषणा 2025-26 के तहत स्वीकृत हैण्डपम्प निर्माण में दौसा जिले की शून्य प्रगति पर गहरी नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि जिन कार्यों की वित्तीय स्वीकृति जारी हुई है। उनका निर्माण कार्य शीघ्र किया जाए साथ ही मुख्यालय स्तर से इन कार्यों की नियमित रूप मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए।

रणथंभौर की प्रसिद्ध बाघिन एरोहेड की मौत

सवाईमाधोपुर। रणथंभौर में गुरुवार का दिन पर्यटकों के लिए दु:खद रहा। गुरुवार दोपहर जोगी महल के पास रणथंभौर की प्रसिद्ध बाघिन टी-84 एरोहेड की मौत हो गई। कुछ दिन पहले ही बाघिन ने जोगी महल के पास पानी में मगरमछ का शिकार किया था। एरोहेड को ट्यूमर की बीमारी थीं जिसका इलाज भी चल रहा था। कुछ माह पहले मेडिकल टीम ने इसका इलाज

- **उधर शावक हुए शिफ्ट, इधर माँ ने कहा अलविदा**

किया और देख रेख की जा रही थी। इसकी मादा शावक कनकटी को आज ही मुकुंदरा टाइगर रिजर्व में शिफ्ट किया गया था। उसके कुछ घंटे बाद ही बाघिन की मौत की सूचना आई।

राजबाग पर हुआ पोस्टमार्टम : वन विभाग की ओर से नाका राजबाग पर बाघिन ऐरोहेड का गुरूवार शाम को पोस्टमार्टम किया गया। यहां पर कुछ पांच सितारा होटल के पर्यटकों को बाघिन के अंतिम संस्कार में अनुमति दी गई थी। इस दौरान मेडिकल बोर्ड ने बाघिन का पोस्टमार्टम किया । पोस्टमार्टम के दौरान यहां वन विभाग की संवेदनहीनता सामने आई। पर्यटक पोस्टमार्टम के खुलेआम वीडियो बनाते हुए दिखाई दिए।

इस वाकया को मीडिया ने अपने कैमरे में कैद कर लिया तो रणथम्भौर के सीसीएफ अनूप के. आर. ने पर्यटकों से वीडियो नहीं बनाने की हिदायद की । जिसके बाद पर्यटकों ने अपने प्रोफेशनल कैमरे बंद किए । बाघिन के अंतिम संस्कार से पहले वन्यजीव प्रेमियों ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की । इस दौरान रणथम्भौर नेचर गाइड एसोसिएशन अध्यक्ष यादवेन्द्र सिंह सहित कई वन्यजीव प्रेमियों ने बाघिन को श्रद्धासुमन अर्पित किए। उल्लेखनीय है बाघिन टी-84 ऐरोहेड की उम्र करीब 11 साल थी। बाघिन ने आखरी बार साल 2023 में तीन शावकों को जन्म दिया था। जिन्हें वन विभाग की ओर से हाल ही में रणथम्भौर से बाहर भेजा गया है।

अंता-बारां विधानसभा सीट पर उप चुनाव होंगे

जयपुर। बारां जिले की अंता - बारां विधानसभा सीट पर उप चुनाव के लिए राज्य निर्वाचन विभाग ने भारत निर्वाचन आयोग को अनुशंसा भेज दी है। अब आयोग तय करेगा उपचुनाव कब कराए जाएं। इसी के साथ राज्य निर्वाचन विभाग ने चुनाव की तैयारियां शुरू करते हुए जिले में के पहले फेज की चेकिंग भी पूरी कर ली है।

भाजपा विधायक कंवरलाल मीणा को अयोग्य करार देने के बाद यह सीट खाली हुई थी। कंवरलाल मीणा को 2005 में उपसरपंच चुनाव के दौरान एक अधिकारी पर पिस्तौल तानने और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के मामले में तीन साल की सजा सुनाई गई थी। सुप्रीम कोर्ट में अपील खारिज होने के बाद मीणा ने स्थानीय मनोहर थाना कोर्ट में सरेंडर किया था।

हालांकि इस मामले में राज्यपाल के यहां बचाव की कोशिश की गई थी,लेकिन वहां से राहत नहीं मिली थी। इसके बाद विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने उनकी सदस्यता समाप्त कर दी थी। यह कार्रवाई जनप्रतिनिधित्व जनता अधिनियम (,1951) की धारा 8 (3) के तहत थी, जो दो साल या उससे अधिक की सजा पर स्वत: अयोग्यता लागू करती है।

डॉ. अशोक गुप्ता यूरोपीय अकादमी के पीओसी बोर्ड में नामित

जयपुर। बाल चिकित्सा के क्षेत्र में प्रसिद्ध चिकित्सा पेशेवर और विचार नेता डॉ. अशोक गुप्ता को यूरोपीय अकादमी के पीओसी बोर्ड में नामित किया गया है। वे सात सदस्यीय बोर्ड में एकमात्र गैर-यूरोपीय हैं और वे वहां

- **बाल चिकित्सा के क्षेत्र में प्रसिद्ध डॉक्टर गुप्ता इस 7 सदस्यीय बोर्ड में एकमात्र गैर-यूरोपीय व्यक्ति हैं**

पहुंचने वाले पहले भारतीय हैं। यह नामांकन दो साल के लिए है। यह समिति नैदानिक परीक्षणों में रोगी सुरक्षा और रोगियों को उचित और इष्टतम उपचार की सुविधा प्रदान करने पर केंद्रित है।

यह विश्व स्वास्थ्य संगठन और कोडेन जैसे वैश्विक संगठनों के सलाहकार के रूप में भी कार्य करता है। यूरोपीय एलर्जी और इम्यूनोलॉजी अकादमी जिसका मुख्यालय ज्यूरिख में स्थित है,स्विट्ज़रलैंडइसमें 124 देश और 50 राष्ट्रीय समाज शामिल हैं। यूरोपीय अकादमी ने भी नामांकन किया है।

गीतांजलि इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, जयपुर के डीन एवं प्रिंसिपल डॉ. अशोक गुप्ता को 13-16 जून, 2025 तक ग्लासगो, स्कॉटलैंड में आयोजित वार्षिक सम्मेलन को संबोधित करने के लिए संस्थान द्वारा आमंत्रित किया गया था।

8 हजार से अधिक प्रतिभागियों की उपस्थिति वाली इस बैठक में पर्यावरण परिवर्तन के प्रभाव और एलर्जी की बढ़ती घटनाओं पर इसके प्रभाव पर ध्यान केंद्रित किया गया। डॉ. अशोक गुप्ता ने भारतीय परिदृश्य प्रस्तुत किया और भारत में एटोपिक डर्माटाइटिस, अस्थमा सहित श्वसन एलर्जी और खाद्य एलर्जी के मामलों में उल्लेखनीय वृद्धि पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अन्य कारणों के अलावा जीवनशैली में बदलाव, विशेषकर पैकेज्ड खाद्य पदार्थों का उपयोग, तथा अपर्याप्त बाहरी गतिविधियां भी इस मामले में वृद्धि का कारण बन रही है।

प्रदेश में जुलाई में आयोजित होगा मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव

मुख्यमंत्री भजनलाल ने विभागवार भर्ती प्रक्रिया की समीक्षा कर शीघ्र नियुक्ति के निर्देश दिये

जयपुर, 19 जून। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश के युवाओं को रोजगार के समुचित अवसर उपलब्ध कराने के लिए कार्ययोजना के तहत भर्तियां आयोजित कर रही है। उन्होंने कहा कि कैलेण्डर के अनुसार भर्ती परीक्षा आयोजित कर युवाओं को समयबद्ध रूप से नियुक्तियां दी जा रही हैं।

- **मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार के सभी विभागों में भर्ती परीक्षा कैलेण्डर के अनुसार, आयोजित कर युवाओं को समयबद्ध रूप से रोज़गार उत्सव के तहत नियुक्तियाँ दी जा रही हैं।**

शर्मा गुरूवार को मुख्यमंत्री निवास पर मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव (जुलाई-2025) की तैयारियों को लेकर आयोजित बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने अधिकारियों को आगामी जुलाई माह में आयोजित होने वाले मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव के आयोजन की तैयारियों के लिए निर्देश दिए। उन्होंने विभागवार लंबित भर्ती प्रक्रियाओं की समीक्षा करते हुए, विभागीय अधिकारियों को नियुक्ति प्रदान करने से पूर्व शेष प्रक्रिया को त्वरित गति से पूर्ण करने के लिए कहा।

मुख्यमंत्री ने प्रदेश में युवाओं के लिए संचालित की जा रही विभिन्न योजनाओं को मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव से जोड़ने के भी निर्देश दिए, जिससे पात्र युवाओं को इन योजनाओं का लाभ मिल सके। शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार ने अब तक मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव के तहत प्रदेश के 67 हजार से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र दिए हैं। उन्होंने कहा कि युवाओं को पूर्ण पारदर्शिता एवं त्वरित गति से विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाए जा रहे हैं।

इस अवसर पर मुख्य सचिव सुधांश पंत सहित, विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव (जुलाई-2025) की तैयारियों को लेकर आयोजित बैठक की अध्यक्षता की।

राहुल गांधी अपने जन्म दिन की पूर्व संध्या को ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रोज़गार मेला में भी शामिल हुए, जहाँ उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तंज कसा, जिनके शासन में बेहिसाब बेरोज़गारी बढ़ी है इसके साथ ही फिल्म फुले की एक विशेष स्क्रीनिंग भी हुई, जिसमें भी सचिन पायलट मौजूद थे, जबकि कई वरिष्ठ नेता या तो जानबूझकर या किसी रणनीति के तहत अनुपस्थित रहे।

राहुल गांधी आज सुबह अपनी माँ सोनिया गांधी को गंगाराम अस्पताल से छुट्टी दिलाकर घर लेकर आए। इसके अलावा, उन्होंने अपने नए सुनहरी बाग स्थित आवास में गृह प्रवेश भी किया, जहाँ अब वे रहेंगे-जबकि अब तक वे 10 जनपथ में रहते थे।

राहुल गांधी ने एआईसीसी में केक काटने ढोल बजाने आदि के लिए मना कर दिया था, क्योंकि वे अपना जन्मदिन सादगी से मनाना चाहते थे। रोचक बात यह रही कि उनकी बहन प्रियंका गांधी ने हर साल की तरह इस बार राहुल को ट्वीट कर जन्मदिन की शुभकामनाएँ नहीं दीं।

इससे एआईसीसी में चर्चा और आशंका का माहौल है, क्योंकि कुछ रिपोर्ट्स के अनुसार प्रियंका गांधी अपने भाई से नाराज़ हैं, और उन नेताओं से भी असंतुष्ट हैं जो फिलहाल राहुल के आस-पास मौजूद है

राहुल गांधी ने सभी को धन्यवाद देते हुए एक ट्वीट जरूर किया।

- **राहुल गांधी विदेश यात्रा से लौटते ही अपनी माँ सोनिया गांधी को गंगाराम अस्पताल से छुट्टी दिलाकर घर ले आये। राहुल गांधी ने अपने नये निवास, सुनहरी बाग पर स्थित बंगले में भी जन्म दिन, गृह प्रवेश की विधिवत् पूजा कर शिफ्ट किया।**

करोना के एक्टिव केस 6,000 से नीचे पहुँचे

नयी दिल्ली, 19 जून। देश में पिछले 24 घंटों के दौरान करोना संक्रमित 1219 मरीजों के स्वस्थ होने के साथ ही, गुरुवार को इस वायरस से निजात पाने वालों की संख्या 17164 तक पहुंच गयी और कुल सक्रिय मामलों की संख्या 5976 रह गयी है। इस अवधि में तीन और मरीजों की मौत से मृतकों की संख्या बढ़ कर 116 पहुंच गयी।

ट्रंप बार-बार भारत-पाक युद्ध बंद करवाने...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विशेषकर राष्ट्रीय सुरक्षा और सीमा-पार आतंकवाद के मामलों में, को बार-बार दोहराया है। ट्रंप का यह कहना कि उन्होंने युद्ध रोका, न सिर्फ भारत के दावे को नकारता है, बल्कि यह भी संकेत देता है कि भारत के पास बिना अमेरिकी हस्तक्षेप के बिना तनाव टालने की क्षमता नहीं है।

दूसरे, ट्रंप की यह टिप्पणी भारत की उस दीर्घकालिक नीति को फिर से चर्चा में ला देती है कि वह कश्मीर या भारत-पाक मामलों में किसी तीसरे पक्ष की मध्यस्थता का विरोध करता रहा है। भारत ने बार-बार 1972 के शिमला समझौते का हवाला देते हुए बाहरी हस्तक्षेप को खारिज किया है। ट्रंप का यह दावा, चाहे घरेलू राजनीति के लिए ही क्यों न किया गया हो, भारत की कमज़ोर नस को छूता है और एक स्थापित कूटनीतिक सिद्धांत को विकृत करता है

तीसरा, इसमें घरेलू राजनीति का भी आयाम है। मोदी की राष्ट्रीय सुरक्षा पर दृढ़ स्थिति उनकी राजनीतिक छवि का एक मुख्य स्तंभ है। यदि यह धारणा बनती है कि भारत दबाव में पीछे हटा या अमेरिका को हस्तक्षेप करना पड़ा, तो इससे सरकार की निर्णायक और स्वतंत्र नेतृत्व की छवि को नुकसान पहुँच सकता है।

ट्रंप की टिप्पणियाँ अमेरिका की ग्लोबल साउथ में अपना प्रभाव खोने की चिंता भी दर्शाती हैं। भारत रूस, खाड़ी देशों और वैश्विक दक्षिण के अन्य देशों के साथ संबंध मजबूत कर रहा है। वॉशिंगटन अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए उत्कुक है। इसलिए ट्रंप का शांति स्थापना का दावा करना, उस प्रभाव को फिर से स्थापित करने का एक प्रयास है, भले ही यह दावा जमीन पर तथ्यों से यह मेल न खाता हो।

इस प्रकार, ट्रंप का, भारत की रणनीतिक पसंद को स्वीकार किए बिना, यह कहना कि उन्होंने "एक युद्ध रोका, केवल एक शब्दजाल नहीं है, यह गहरी विसंगति को उजागर करता है कि दोनों देश कूटनीति, श्रेय और संप्रभुता को एकदम अगल तरह से देखते हैं। हालाँकि मोदी ट्रंप की कॉल्स को शिष्टता से स्वीकार कर सकते हैं, लेकिन नई दिल्ली उन नैरेटिव्स को लेकर सतर्क है, जो उसकी भूमिका को कमज़ोर दिखाते हैं। तनाव केवल तथ्यों पर नहीं है, बल्कि इस बात पर है कि किसकी कहानी सही है और भू-राजनीति में, यह बात नतीजे जितनी ही महत्वपूर्ण है।

- **मोदी विनम्रता से ट्रंप के टेलीफोन कॉल्स को स्वीकार करके, कूटनीतिक सद्व्यवहार से बात तो जरूर करते हैं, पर, मोदी किसी भी कीमत पर भारत की सार्वभौमिकता को दिए जाने वाले आघात को स्वीकार नहीं करेंगे।**
- **दोनों देश, भारत व अमेरिका, अपने-अपने विवरण को सच के रूप में स्थापित करना चाहते हैं और जिसकी कहानी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार होती है। वह ही सबसे ज्यादा अहमियत रखता है, क्या वाकई में तथ्य है, नहीं।**

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, जी-1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौन सिटी, जिला करौली से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2008/27147 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908